50 वां
1969 स्वर्ण जयंती वर्ष 2019

स्मारिका

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
जयपुर

दृष्टि....

हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो- चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा हिन्दी बना सकती है।

-महात्मा गाँधी

दिशा बोध....

आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है, जिसका एक-एक दल, एक-एक प्रान्त, भाषा और उसका साहित्य व संस्कृति है।.... और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहै।

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

संकल्प...

एक संस्थान, जो ज्ञान-विज्ञान के अथाह भंडार को हिन्दी में उपलब्ध करवाने के लिए कृत संकल्प है।

-राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

संकल्प...

यदि हम लोगों ने तन-मन-धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं है जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी।

-नेताजी सुभाषचंद्र बोस

आप सभी को

हार्दिक शुभकामनाएँ

अनुक्रम

	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	निदेशक की कलम से	5
2.	अकादमीः विचार से संस्थापन तक	6
3.	अकादमी का संवैधानिक ढाँचा	10
4.	अकादमी का प्रशासनिक ढाँचा	12
5.	प्रगति प्रतिवेदन	23
6.	रचनात्मक गतिविधियाँ	27
7.	पूर्व निदेशकों की कलम से	29
8.	गाँधी चिन्तन	34
9.	प्रज्ञा पुरस्कार विजेता लेखक	35
10.	लेखकों की कलम से...	41
11.	अकादमी की पुरस्कृत पुस्तकें	45
12.	अकादमी की भावी योजनाएँ	49
13.	राजस्थान पुस्तक पर्व का आयोजन	54
14.	यादों का झरोखा	57
15.	समाचारपत्रों से...	64

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

अ.शा.पत्र/मुम./ओएसडीएफ/2019
जयपुर, 18 जुलाई, 2019

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर अकादमी के स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी संस्था द्वारा सेवा के 50 वर्ष पूर्ण होना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। यह शुभ है कि अकादमी राष्ट्रभाषा हिन्दी भाषा के उन्नयन के साथ विद्वान लेखकों से ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी, इतिहास, समाज विज्ञान, शिक्षा, संस्कृति सहित विविध विषयों की महत्वपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन एवं उनके राष्ट्रव्यापी विपणन की दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

आशा है अकादमी अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए भविष्य में भी उच्च स्तरीय प्रकाशनों, सेमिनार, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी को लाभान्वित करने में अग्रसर रहेगी।

मैं अकादमी परिवार को स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर बधाई देते हुए समारोह के आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

भंवर सिंह भाटी
राजस्व, राज्य मंत्री
उच्च शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार),
उपनिवेशन,कृषि सिंचित क्षेत्रीय विकास
एवं जल उपयोगिता विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर–302005

शुभकामना संदेश

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं अकादमी से जुड़े सभी विद्यार्थियों, लेखकों एवं कर्मचारी वर्ग को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का एक महत्त्वपूर्ण सपना हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिस्थापित करना था। हर्ष का विषय है कि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने पिछले पचास वर्षों के दौरान इस दिशा में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य किया है। इन पांच दशकों में उच्च शिक्षा के लगभग सभी विषयों तथा पाठ्यक्रमों को लेकर अकादमी ने 660 से भी अधिक संदर्भ–ग्रंथों एवं पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन किया है, जो एक गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

देश की आजादी के पश्चात् हिन्दी भाषा के प्रोन्नयन एवं राष्ट्रव्यापी प्रचार–प्रसार के लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा विभिन्न राज्यों में हिन्दी ग्रन्थ अकादमियों की स्थापना की गई थी। उसी क्रम में जुलाई, 1969 में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी अस्तित्व में आई। अकादमी अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूर्ण कर रही है। अकादमी के राष्ट्रभाषा उन्नयन की दिशा में किए गए इस अथक कार्य के लिए मैं अकादमी परिवार तथा इससे जुड़े सभी अध्येताओं को फिर एक बार इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(भंवर सिंह भाटी)

निदेशक की कलम से

सर्वप्रथम मैं राजस्थान सरकार के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ कि मुझे राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक पद के महत्वपूर्ण दायित्व को निभाने का अवसर प्रदान किया। निःसंदेह यह एक जिम्मेदारी से भरा काम है जिसे मैं अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से वहन किये जाने का भरपूर प्रयास कर रहा हूँ।

मैंने इस पद पर जनवरी 2019 को कार्यभार ग्रहण किया है। अकादमी ने मेरे द्वारा पदभार ग्रहण करने के बाद वर्ष 2018–2019 में तीन करोड़ 71 लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री का कीर्तिमान स्थापित किया है। इसमें से करीब 60 लाख रुपये लेखकों को रॉयल्टी के रूप में दिए गए हैं जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। पारदर्शिता बनाए रखने के लिए रायल्टी का भुगतान ऑनलाइन किया जा रहा है। रॉयल्टी का ब्यौरा अकादमी की वेबसाइट पर निरन्तर अद्यतन रहता है। अकादमी की स्थापना हिन्दी भाषा में विश्वविद्यालय स्तर के वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य तथा मानविकीय साहित्य के निर्माण तथा प्रकाशन के लिए हुई है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए आने वाले समय में हम कई सकारात्मक एवं सृजनात्मक नवाचार करने जा रहे हैं।

नवाचार की इस कड़ी में बीज ग्रन्थमाला का प्रकाशन तथा विश्वप्रसिद्ध पुस्तकों के अनुवाद का कार्य भी शामिल है। अकादमी की योजना है कि तकनीकी विषयों की पुस्तकों का मानकीकरण करवाया जाए ताकि हिन्दी माध्यम में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को गुणवत्तायुक्त प्रामाणिक पठन सामग्री उपलब्ध हो सके। इस वर्ष इस अभियान पर चरणबद्ध ढंग से कार्य किये जाने की योजना है।

राजस्थान निर्माण की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर ''स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा'' श्रृंखला के अंतर्गत 61 मानोग्राफों का प्रकाशन कार्य राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के द्वारा किया गया था। मोनोग्राफ प्रकाशन के उस कार्य को आगे बढ़ाते हुए अकादमी 2006 से 2019 के मध्य दिवंगत विभूतियों पर एक पुस्तकमाला का प्रकाशन करने जा रही है।

मुझे गांधीजी के इस कथन पर पूरा विश्वास है कि ''खुशी तब मिलेगी जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, उसमें सामंजस्य हो।''

मार्ग कठिन है किन्तु दृढ़ इच्छाशक्ति और सुनियोजित कार्यप्रणाली से हम अपने उद्देश्यों में अवश्य ही सफल होंगे इसका मुझे पूरा यकीन है।

भवदीय

डॉ. बी.एल. सैनी

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

विचार से संस्थापन तक : इतिहास का एक लंबा सफर

भारत जब आजाद हुआ तो स्वतंत्रता संघर्ष में तपकर निकले हमारे स्वाभिमानी नेताओं ने औपनिवेशिक छाया से मुक्त हमारे अपने सांस्कृतिक प्रतीकों को पुनर्जीवित एवं पुनर्स्थापित करने का बीड़ा उठाया। राष्ट्रभाषा का मुद्दा भी उनमें से एक था। उधर, आजादी से कोई तीन दशक पहले स्वयं महात्मा गांधी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्रदान कर चुके थे। भरूच शहर में 1917 में आयोजित गुजरात के एक शैक्षिक सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अंगीकार किया जा सकता है क्योंकि हिन्दी अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है तथा यह समस्त देश में राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक सम्पर्क की एक सक्षम भाषा है। अपने इस अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने समस्त देशवासियों से हिन्दी भाषा सीखने की मार्मिक अपील भी की थी।

आजादी के पश्चात् देश की बदली हुई परिस्थितियों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का यह संकल्प हालांकि राजनीतिक बियाबान में खोकर रह गया और आज तक सरकारी स्तर पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार नहीं

किया गया है, किन्तु संविधान सभा ने आजादी के तुरन्त बाद हिन्दी को भारत संघ की औपचारिक राजभाषा जरूर घोषित कर दिया था।

संविधान में 343 से 351 तक के अनुच्छेद राष्ट्रीय भाषा नीति से संबंधित हैं। अनुच्छेद 351 में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु सरकारी दायित्वों का उल्लेख है - ''संघ सरकार का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा की प्रसार वृद्धि करे तथा इसका इस तरह विकास करे कि यह भारत की सामाजिक संस्कृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए जहाँ आवश्यक अथवा वांछनीय हो वहाँ उसके भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।''

संविधान की उक्त भावना के अनुरूप भारत सरकार द्वारा विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पठन-पाठन में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की ओर ध्यान दिया गया किन्तु संदर्भ ग्रन्थ एवं शैक्षणिक पुस्तकों विशेषतः विज्ञान, तकनीकी एवं विधिक शिक्षा के क्षेत्र में मानक शब्दावली की अनुपलब्धता ने हिन्दी के प्रयोग में बड़ी बाधा उत्पन्न कर दी थी जिसका निराकरण विषय विशेषज्ञों एवं भाषाविदों से अपेक्षित था। यहाँ तक कि शासकीय पत्राचार हेतु एक मानक प्रशासनिक शब्दावली का भी इस नवघोषित राजभाषा में अभाव था।

उक्त कठिनाइयों को देखते हुए अनुच्छेद 351 की पालना में भारत सरकार के अधीन पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की योजना का शुभारंभ हुआ। हालांकि गैर सरकारी स्तर पर इससे पूर्व भी अनेक भाषा विशेषज्ञों एवं हिन्दी सेवी संस्थाओं यथा काशी की काशी नागरी प्रचारिणी सभा, अलीगढ़ की साइंटिफिक सोसाइटी व प्रयाग की भारतीय हिन्दी परिषद् आदि ने इस दिशा में स्वतःस्फूर्त प्रयास किए थे किन्तु एक समन्वित एवं व्यापक शब्दावली के विकास हेतु अंततः इस दिशा में भारत सरकार ने कार्य आरंभ किया। विभिन्न विषयों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावलियों के अभाव में उस वक्त किसी मानक तकनीकी साहित्य की रचना हिन्दी में संभव नहीं थी।

सन् 1948 में भारत सरकार ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना की जिसमें सिफारिश की गई - ''अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली को अपना लिया जाये, दूसरी भाषाओं से आए शब्द आत्मसात कर लिए जायें और उनका वर्ण-विन्यास भारतीय लिपियों के ध्वनि संकेतों के अनुसार निश्चित कर लिया जाये।''

वैज्ञानिक तथा शब्दावली मंडल

1950 में भारत सरकार द्वारा **वैज्ञानिक तथा शब्दावली मंडल** की स्थापना की गई। इस मंडल की पहली बैठक 11 दिसम्बर 1950 को हुई जिसकी अध्यक्षता करते हुए तत्कालीन शिक्षामंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कहा - ''हम यहाँ हिन्दी और दूसरी प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान के माध्यम के योग्य बनाने के लिए एकत्र हुए हैं।''

हिन्दी अनुभाग

उक्त **शब्दावली मंडल** से मिले सुझावों के आधार पर 1952 में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के

अन्तर्गत एक **हिन्दी अनुभाग** की स्थापना की गई और विविध विषयों की शब्दावली निर्माण का कार्य शुरू हुआ। साथ ही सरकारी कर्मचारियों हेतु हिन्दी शिक्षण, देवनागरी टाइप-राइटर के कुंजीपटल का विकास, हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण, हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी जैसे काम भी हिन्दी अनुभाग द्वारा किए जाने लगे। कार्य के इस बढ़ते हुए दबाव को देखकर सरकार ने हिन्दी अनुभाग को एक और बड़े संगठन हिन्दी प्रभाग में रूपांतरित कर दिया।

हिन्दी प्रभाग

1959 के अंत तक **हिन्दी प्रभाग** शैक्षणिक पाठ्यक्रम के सभी प्रमुख विषयों की आधारभूत शब्दावलियाँ तैयार कर चुका था जिन्हें अब सुझाव हेतु विभिन्न विषय विशेषज्ञों एवं संबंधित संस्थाओं को भेजा गया। इस बीच 1956 में श्री बी.जी. गैर की अध्यक्षता में **राष्ट्रभाषा आयोग** की स्थापना भी हो चुकी थी।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

1 मार्च 1960 को **केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय** अस्तित्व में आया और शब्दावली निर्माण सम्बंधी कार्य अब हिन्दी प्रभाग से हटाकर इस निदेशालय को दे दिया गया।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

अक्टूबर 1961 में अंततः **वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग** की स्थापना हुई जो आज तक हिन्दी में पारिभाषिक शब्दकोशों के निर्माण, तकनीकी भाषा के मानकीकरण तथा पुस्तक लेखन एवं प्रकाशन में अपनी महती भूमिका निभा रहा है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की जब स्थापना हुई तो अन्य अनेक कार्यों के साथ-साथ इसे दो कार्य ऐसे भी सौंपे गए थे जो बाद के वर्षों में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना तथा इसकी नीति निर्धारण की प्रेरणा बने। यह दो कार्य थे -

1. राज्यों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए गए कार्य का संबंधित राज्य सरकारों की सहमति से या उनके अनुरोध पर समन्वय और सम्बंधित संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत की गई शब्दावलियों का अनुमोदन, तथा
2. आयोग द्वारा निर्मित या स्वीकृत की गई शब्दावली का प्रयोग करते हुए विभिन्न विषयों की मानक पुस्तकों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दकोशों का निर्माण और प्रकाशन तथा विदेशी भाषाओं की पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद।

उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन

सन् 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत **उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन** पर बल दिया गया क्योंकि अब तक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विभिन्न विषयों की

आधारभूत शब्दावलियों का निर्माण किया जा चुका था और तकनीकी एवं मानविकी विषयों के पाठ्यक्रम सम्बंधी लेखन में एक प्रारम्भिक आत्मविश्वास अर्जित कर लिया गया था। शब्द निर्माण की प्रक्रिया में आयी इस परिपक्वता को लेकर यहाँ हिन्दी के प्रख्यात विद्वान डॉ. रघुवीर का एक कथन उद्धृत करना उपयुक्त होगा - ''हम शब्द उधार लेने वाली भाषाओं में विश्वास नहीं करते। हमें अपनी भाषाओं को इस योग्य बनाना है कि वे शब्द-निर्माण करने वाली भाषा बन सकें।''

एक लंबी और निरंतर विकास की ओर अग्रसर इस पृष्ठभूमि को देखते हुए अब जरूरी हो गया था कि हिन्दी माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में - ''राज्य सरकारों की सहायता से सक्षम संस्थाओं का विकास किया जाये जो आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग करवाएँ ताकि विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम परिवर्तन हेतु ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं में पर्याप्त ग्रन्थ उपलब्ध हो सकें। परिणामस्वरूप हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी ग्रन्थ अकादमियों एवं अहिन्दी भाषी प्रदेशों में पुस्तक मण्डलों और कुछ विश्वविद्यालयों में प्रकाशन निदेशालयों की स्थापना हुई।''

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

सन् 1969 से 1974 तक क्रियान्वित रही चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान सभी राज्यों को इस मद में एक-एक करोड़ रुपए का अनुदान देना स्वीकार किया गया जो उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार आयोग की सिफारिशों पर विमुक्त किया जाने लगा। इसी क्रम में वर्ष 1969 में **राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी** की जयपुर शहर में स्थापना की गई।

''राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी'', जिसका पूर्व नाम ''राजस्थान ज्ञान-विज्ञान हिन्दी रचना संस्थान'' था, का औपचारिक उद्घाटन राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया के हाथों 15 जुलाई, 1969 के दिन राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रांगण में हुआ और 5 अगस्त, सन् 1969 के दिन राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम (राजस्थान अधिनियम नं. 28, 1958) के अंतर्गत इसका पंजीकरण करवाया गया। संस्थान का पंजीकृत कार्यालय जयपुर में स्थापित हुआ।

अकादमी पर शोध-प्रबंध

सन् 2010 में श्रीमती इंदिरा रानी ने शिक्षाशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि हेतु अकादमी पर एक शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया था। ''राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की शैक्षिक उपादेयता'' शीर्षक के अन्तर्गत शोधार्थी द्वारा अकादमी की स्वायत्तता, संरचना व कार्यप्रणाली पर इस शोध-प्रबंध में प्रामाणिक अनुसंधान-अध्ययन प्रस्तुत किया गया था जो इस विषय पर समग्र संदर्भ-स्रोत है।

पानी बचाओ - बिजली बचाओ, बेटी पढ़ाओ - बेटी बचाओ

अकादमी का संवैधानिक ढाँचा

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी एक स्वायत्तशासी पंजीकृत संस्थान है जिसके विभिन्न पद-सोपान एवं कार्यकलाप लिखित रूप में संहिताबद्ध हैं। अकादमी की सर्वोच्च संचालिका इसकी एक शासी परिषद् है जो नीतिगत निर्णय लेने में सक्षम है। राज्य के उच्च शिक्षामंत्री इस शासी परिषद् के पदेन अध्यक्ष होते हैं। अध्यक्ष के अलावा 27 अन्य सदस्य इसमें सम्मिलित हैं,जिनमें 16 पदेन सदस्य तथा 11 सदस्य राज्य सरकार द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।

अकादमी के विधान की धारा 5 (अ) के अनुसार इस संस्थान के प्रथम सदस्य निम्न प्रकार होंगे जिन्हें संयुक्त रूप से अकादमी की संचालक परिषद् अथवा शासी परिषद् कहा जायेगा -

1. राज्य के शिक्षमंत्री-अध्यक्ष
2. उप शिक्षामंत्री
3. कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
4. कुलपति, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर
5. कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर
6. कुलपति, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर
7. कुलपति, वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्याल, कोटा
8. वित्त आयुक्त, राजस्थान सरकार। आवश्यक होने पर वित्त आयुक्त अपने द्वारा मनोनीत व्यक्ति को सभा में उपस्थित होने के लिए भेज सकेंगे, परन्तु यह व्यक्ति वित्त विभाग में उप सचिव से नीचे के स्तर का अधिकारी नहीं होगा।
9. शिक्षा सचिव, राजस्थान सरकार
10. निदेशक, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान
11. निदेशक, बिड़ला वैज्ञानिक तथा तकनीकी संस्थान, पिलानी
12. निदेशक, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर
13. संकायाध्यक्ष, अभियांत्रिकी संकाय, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर
14. राजस्थान, जोधपुर तथा उदयपुर विश्वविद्यालयों के कृषि, आयुर्विज्ञान तथा पशु चिकित्सा विज्ञान संकायों के अध्यक्ष
15. राज्य सरकार द्वारा मनोनीत तीन प्रख्यात शिक्षाविद्
16. पाँच या अधिक अन्य ऐसे विशेषज्ञ जिनका सम्बंध मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विधिशास्त्र, विज्ञान तथा प्रायोगिक विज्ञान आदि से है।
17. संबंधित क्षेत्रों जैसे प्रकाशन में कार्य करने वाले दो व्यक्ति, जो राजस्थान सरकार द्वारा मनोनीत किये जायेंगे।
18. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण की राष्ट्रीय समिति के प्रतिनिधि।

अकादमी के विधान के अनुसार निर्मित एक निष्पादक समिति भी शासी परिषद् के इस गठन के समय अस्तित्व में आयी जो प्रशासन के

संचालन और शासी परिषद् द्वारा लिए गए निर्णयों एवं निर्धारित नीतियों के क्रियान्वयन के लिए उत्तरदायी है। विधान के नियम 6 (अ) में लेख है कि निष्पादक समिति में कम से कम 10 सदस्य होंगे।

निम्नलिखित 4 पदेन सदस्यों के अतिरिक्त शेष सदस्य शासी परिषद् के सदस्यों से ही चुने जायेंगे।

1. वित्त आयुक्त (व्यय-1) अथवा उनके द्वारा मनोनीत व्यक्ति, जो कि वित्त विभाग में उप सचिव से नीचे का पदाधिकारी नहीं होगा।
2. शिक्षा सचिव, राजस्थान।
3. कॉलेज शिक्षा निदेशक, राजस्थान।
4. क्षेत्र विशेषज्ञ समितियों के अध्यक्ष।

निष्पादक समिति के शेष 6 सदस्य शासी परिषद् के सदस्यों में से चुने जायेंगे और शासी परिषद् के अध्यक्ष (यानी उच्च शिक्षामंत्री) निष्पादक समिति के भी अध्यक्ष होंगे।

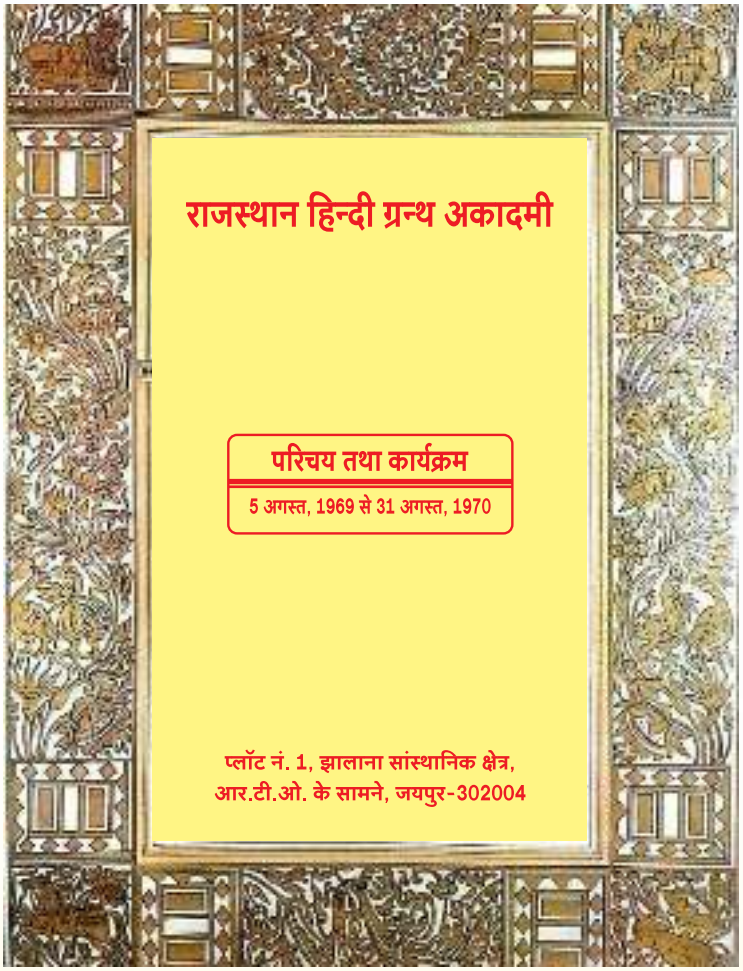

संविधान

अकादमी का प्रशासनिक ढाँचा

अकादमी निदेशक

वर्तमान में अकादमी के दैनंदिन संचालन हेतु निदेशक का पद सर्वोच्च पद है। अकादमी का निदेशक अकादमी का पूर्णकालिक अधिकारी है, वह अकादमी की कार्यसमिति के सचिव का कार्य भी करते हैं और अकादमी के दिन-प्रतिदिन प्रशासन के लिए उत्तरदायी हैं। वह अकादमी की उपयुक्त व्यवस्था के लिए आदेश देने के लिए तथा उसमें अनुशासन बनाए रखने के लिए उत्तरदायी हैं। अकादमी के शेष सभी पदाधिकारी निदेशक के अधीन कार्य करते हैं।

अकादमी निदेशकों की सूची

क्र.सं.	नाम	कब से	कब तक	विषय
1.	श्री सौभाग्य चन्द्र माथुर	12.6.69	1.1.71	अंग्रेजी
2	श्री यशदेव शल्य	2.1.71	5.7.71	दर्शन
3.	श्री कल्याण मल लोढ़ा	6.7.71	31.12.71	हिन्दी
4.	श्री यशदेव शल्य	1.1.72	31.7.72	दर्शन
5.	श्री स.ही. वात्सायन	1.8.72	30.9.72	हिन्दी
6.	श्री यशदेव शल्य	1.10.72	4.3.73	दर्शन
7.	श्री गौरीशंकर सत्येन्द्र	5.3.73	15.8.74	हिन्दी
8.	श्री गोपीकृष्ण व्यास	16.8.74	24.7.75	अंग्रेजी
9.	श्री शिवनाथ सिंह कपूर	25.7.75	6.7.76	अंग्रेजी
10.	श्री यशदेव शल्य	7.7.76	28.11.78	दर्शन
11.	डॉ. महावीर प्रसाद दाधीच	29.11.78	13.5.79	हिन्दी
12.	श्री यशदेव शल्य	14.5.79	5.7.79	दर्शन
13.	डॉ. रामबली उपाध्याय	6.7.79	5.7.81	व्यावसायिक प्रशा.
14.	श्री रामस्वरूप शर्मा	6.7.81	25.7.81	–
15.	डॉ. रामबली उपाध्याय	26.7.81	30.12.81	व्यावसायिक प्रशा.
16.	डॉ. पुरुषोत्तम नागर	31.12.81	8.1.85	राजनीति शास्त्र
17.	डॉ. जे.एम. श्रीवास्तव	9.1.85	12.4.85	–
18.	डॉ. राघव प्रकाश	13.4.85	31.1.91	हिन्दी
19.	डॉ. वेद प्रकाश	31.1.91	20.2.2000	अंग्रेजी
20.	श्री हेमन्त शेष RAS	21.2.2000	21.4.2000	–
21.	डॉ. रामधारी सैनी	22.4.2000	18.3.2004	हिन्दी
22.	श्री सी.बी. शर्मा RAS (का.वा.)	19.3.2004	23.5.2004	–
23.	डॉ. रामधारी सैनी	24.5.2004	18.6.2013	हिन्दी
24.	श्री नवीन जैन IAS (का.वा.)	28.6.2013	4.10.2013	–
25.	डॉ. रमेश चन्द वर्मा	5.10.13	3.2.14	हिन्दी
26.	श्री नवीन जैन IAS (का.वा.)	4.2.14	9.2.14	–
27.	श्री समीर सिंह चन्देल IAS (का.वा.)	10.2.14	4.6.14	–
28.	श्री दीपक नंदी RAS (का.वा.)	5.6.14	14.3.17	–
29.	डॉ. अनीता नायर (का.वा.)	15.3.17	18.1.19	हिन्दी
30.	डॉ. बी.एल. सैनी	19.1.19		राजनीति विज्ञान

भाषा सम्पादक

प्रकाशन कार्य की रूपरेखा तैयार करना, समय-समय पर विषयनामिकाओं की बैठकें आयोजित करना, पाठ्यक्रमानुसार प्राप्त प्रस्तावों का आकलन करना, प्राप्त पाण्डुलिपियों का भाषा सम्पादन करना, वार्षिक लेखन योजना का लक्ष्य निर्धारित करना, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का संचालन तथा निदेशक द्वारा निर्देशित अन्य कार्यों का संपादन भाषा सम्पादक द्वारा किया जाता है।

अकादमी के सुचारु एवं कुशल संचालन हेतु इसके कामकाज का बंटवारा पाँच अलग-अलग शाखाओं के तहत किया गया है। इनमें कुछ तकनीकी कर्मचारी उस शाखा विशेष के कार्य से संबंधित होते हैं। गैर विशेषज्ञ लिपिक आदि कर्मचारियों को तात्कालिक आवश्यकता के अनुसार अकादमी निदेशक किसी भी शाखा में भेज सकते हैं। कुल मिलाकर अकादमी की यह सभी शाखाएँ अकादमी निदेशक के निर्देशन में एक समन्वित इकाई के रूप में कार्य करती हैं। यह शाखाएं हैं :-

1. संस्थापन शाखा
2. शैक्षिक शाखा
3. प्रकाशन शाखा
4. बिक्री शाखा
5. लेखा शाखा

1. संस्थापन शाखा

इस शाखा के अन्तर्गत संस्थापन प्रभारी एवं सहायक प्रशासनिक अधिकारी कार्यरत हैं। अकादमी के संस्थापन सम्बन्धी सभी कार्य, सामान्य प्रशासन, सम्पत्ति की देखभाल आदि का कार्य इसी शाखा द्वारा सम्पादित किया जाता है।

2. शैक्षिक शाखा :

इस शाखा का कार्य अकादमी में विशेष महत्व का है। प्रकाशन हेतु पाण्डुलिपियाँ लिखवाना तथा श्रेष्ठ पाण्डुलिपि चयन का कार्य इसी शाखा द्वारा किया जाता है। पाण्डुलिपि चयन की प्रक्रिया में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विभिन्न विषयों यथा विज्ञान, तकनीकी, वाणिज्य, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, ललित कला तथा कृषि की पुस्तकें मुख्यतः प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों पर आधारित हों। इसके अलावा संदर्भ ग्रन्थ तथा ऐसे विशिष्ट विषयों की पुस्तकें भी अकादमी द्वारा प्रकाशित की जाती हैं जो ज्ञान-विज्ञान का मार्ग प्रशस्त करें और प्रायः अनुपलब्ध विषयों की पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवायें।

यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य है कि निजी प्रकाशकों द्वारा छापी गई पुस्तकों की तुलना में अकादमी की पुस्तकें निश्चय ही श्रेष्ठ होती हैं क्योंकि यह पुस्तकें संबंधित विषय के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखी जाती हैं। अकादमी का उद्देश्य उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों को 'न लाभ - न हानि' के सिद्धान्त पर चलकर कम मूल्य में स्तरीय पुस्तकें उपलब्ध करवाना है जबकि निजी प्रकाशनगृह विशुद्ध लाभ कमाने की दृष्टि से पुस्तकें छापते और बेचते हैं। विषय के स्तर के प्रति न तो वे उतने चिंतित होते हैं और न स्तरीय पाण्डुलिपि के चयन का उनके पास अकादमी जैसा कोई सुसंगठित तंत्र मौजूद होता है।

निजी प्रकाशक के लिए पुस्तक की बिक्री पर मिलने वाला लाभ ही सर्वप्रमुख है जबकि एक सार्वजनिक संस्थान होने के कारण अकादमी की प्रतिबद्धता पुस्तक की श्रेष्ठता को लेकर है।

लेखन में मानक शब्दावली का प्रयोग :

अकादमी द्वारा दिए गये विज्ञापनों के क्रम में लेखक की ओर से प्राप्त लेखन प्रस्ताव की स्वीकृति के साथ लेखक को सुझाव दिया जाता है कि वह निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर पुस्तक की रचना करे और लेखन में मानक शब्दावली का प्रयोग करे। मानक शब्दावली के प्रयोग को सुनिश्चित करवाने के लिए लेखक से वचनबंध लिया जाता है। इस प्रकार लेखक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को दृष्टि में रखकर पुस्तक की रचना करते हैं और भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रस्तुत मानक शब्दावली का प्रयोग करते हैं।

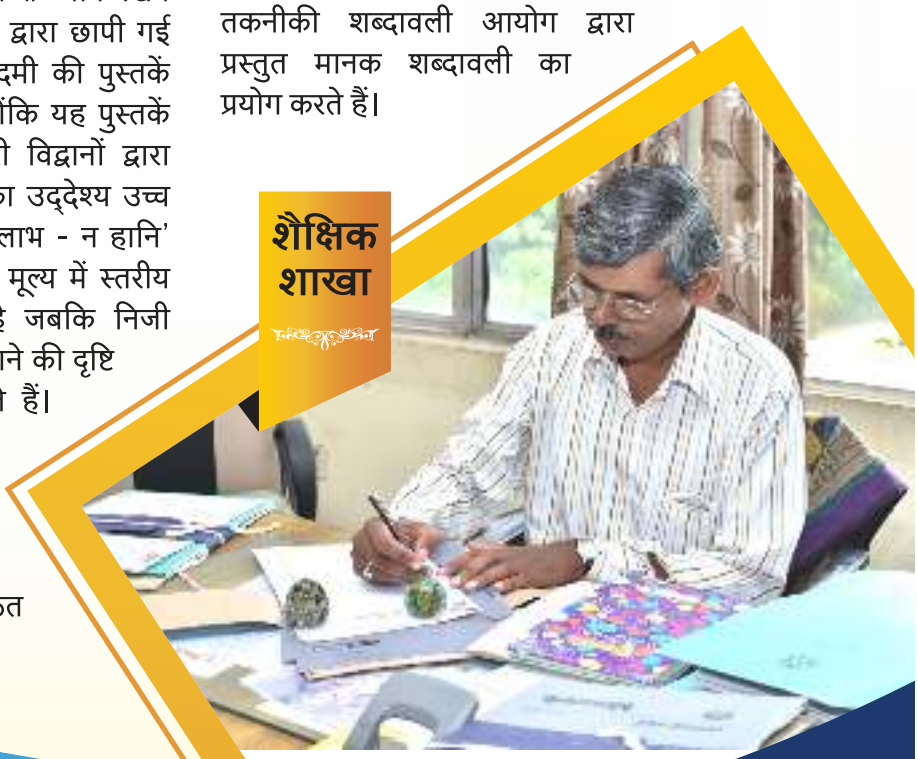

प्रकाशन शाखा

लेखकों की रॉयल्टी :

लेखकों के साथ अकादमी द्वारा विधिवत अनुबंध किया जाता है जिसके अनुसार कॉपीराइट अकादमी के अधीन होता है और लेखक को 20 प्रतिशत रॉयल्टी देय होती है। रॉयल्टी का भुगतान वित्तीय वर्ष के समापन पर अप्रैल अथवा मई माह में कर दिया जाता है। लेखकगण चाहें तो अपनी रॉयल्टी का लेखा-जोखा www.rajhga.com पर देख सकते हैं। यह वेबसाइट प्रतिदिन अद्यतन होती रहती है। रॉयल्टी की यह व्यवस्था पूर्णतः पारदर्शी है तथा अन्य प्रकाशनगृहों के लिए अनुकरणीय है।

प्रसिद्ध पुस्तकों का अनुवाद :

अकादमी द्वारा अपनी स्थापना के प्रारंभिक वर्षों में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान की महत्वपूर्ण पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद करवाया गया था। धीरे-धीरे केन्द्र सरकार की नीति के अनुसार हिन्दी में मौलिक पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जाने लगा और अनुवाद का कार्य क्रमशः न्यून होता चला गया। फिर भी विश्वप्रसिद्ध अनेक पुस्तकों के अनुवाद का कार्य अभी जारी है।

3. प्रकाशन शाखा :

अकादमी की प्रकाशन शाखा के द्वारा पुस्तकों का मुद्रण करवाया जाता है। इस शाखा का प्रमुख एक प्रकाशन अधीक्षक होता है।

प्रकाशन अधीक्षक के अलावा इस शाखा में प्रकाशन सहायक, प्रोग्रामर एवं एक कनिष्ठ लिपिक का पद है। इस शाखा के द्वारा अंतिम रूप से संशोधित पाण्डुलिपियों को मुद्रित करवाने का कार्य किया जाता है।

पुस्तक के कम्पोजिंग, पृष्ठ-सज्जा एवं आवरण डिजाइन बनवाने का कार्य भी इसी शाखा के अधीन है। पुस्तक आकर्षक रूप से सुंदर आवरण एवं जिल्द के साथ प्रकाशित हो, यह प्रकाशन अधीक्षक द्वारा प्रेस के मालिक के

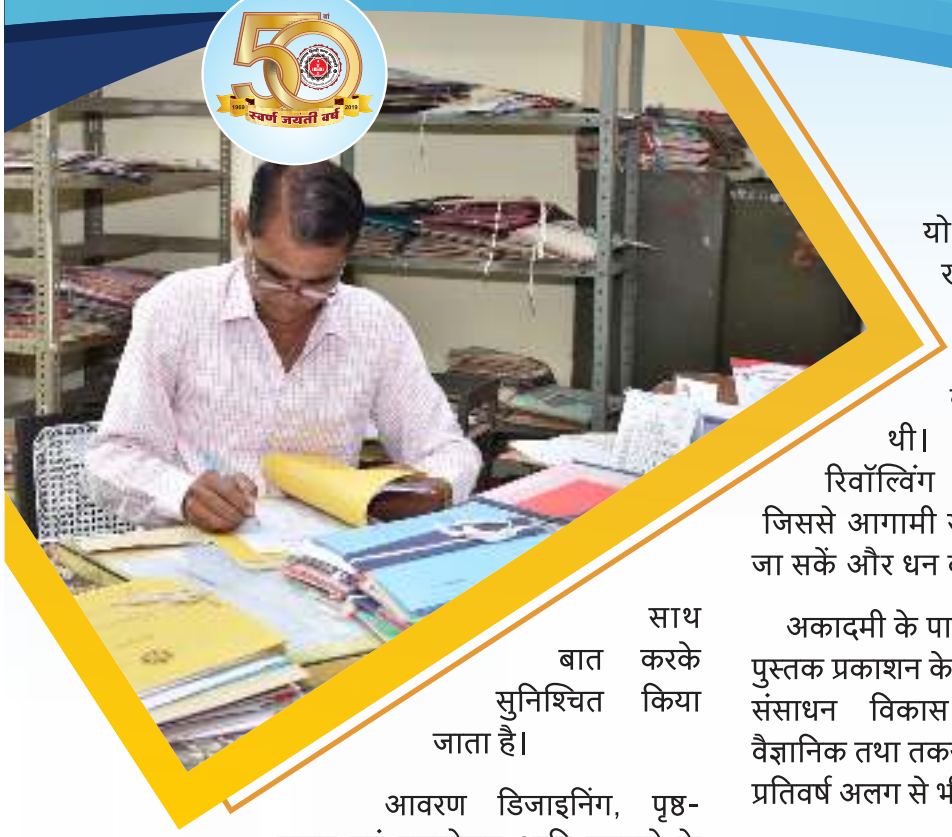

साथ बात करके सुनिश्चित किया जाता है।

आवरण डिजाइनिंग, पृष्ठ-सज्जा एवं इलस्ट्रेशन आदि बनवाने के लिए बाहर के सिद्धहस्त कलाकारों की मदद ली जाती है।

एक पुस्तक की प्रायः 1100 प्रतियाँ मुद्रित करवाई जाती हैं किंतु आवश्यकतानुसार प्रकाशित प्रतियों की संख्या में बदलाव भी किए जाते हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अकादमी कम से कम कीमत पर विद्यार्थियों के लिए हिन्दी माध्यम की श्रेष्ठतम पुस्तकें उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। संस्थान का यह उद्देश्य इसलिए पूरा हो पाता है क्योंकि पुस्तक प्रकाशन के कार्यों का शत-प्रतिशत व्यय इसे भारत सरकार से प्राप्त होता है। भारत सरकार ने चौथी पंचवर्षीय योजना में एक करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया था जो अकादमी की मांग के अनुसार बजट आधार पर प्रतिवर्ष आगामी पंचवर्षीय योजनाओं तक दिया जाता रहा। वर्ष 1994 की अवधि तक यह समस्त राशि (रुपये 1 करोड़ की राशि) प्राप्त हो चुकी थी। पुस्तकों की बिक्री से रिवॉल्विंग फंड बनाया गया था जिससे आगामी संस्करण प्रकाशित कराये जा सकें और धन की कमी न रहे।

अकादमी के पास उपर्युक्त फंड के अलावा पुस्तक प्रकाशन के लिए केन्द्र सरकार (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के अधीन वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग से प्रतिवर्ष अलग से भी अनुदान प्राप्त होता है।

4. पुस्तक बिक्री शाखा

यह शाखा अकादमी की रीढ़ है। पुस्तकें प्रकाशित हों और बिकें नहीं तो सारा परिश्रम व्यर्थ है। अकादमी 'न लाभ-न हानि' के सिद्धान्त के अनुसार पुस्तकों का प्रकाशन करती है और इन पुस्तकों की गुणवत्ता भी उच्च कोटि की होती है। अतः महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के बीच अकादमी की पुस्तकें निरंतर लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं। मानविकी विषयों की पुस्तकों के कई-कई संस्करण अब तक बड़ी संख्या में प्रकाशित किए जा चुके हैं और यह पुस्तकें विद्यार्थियों के बीच स्थापित हो चुकी हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों के बीच अकादमी की पुस्तकें

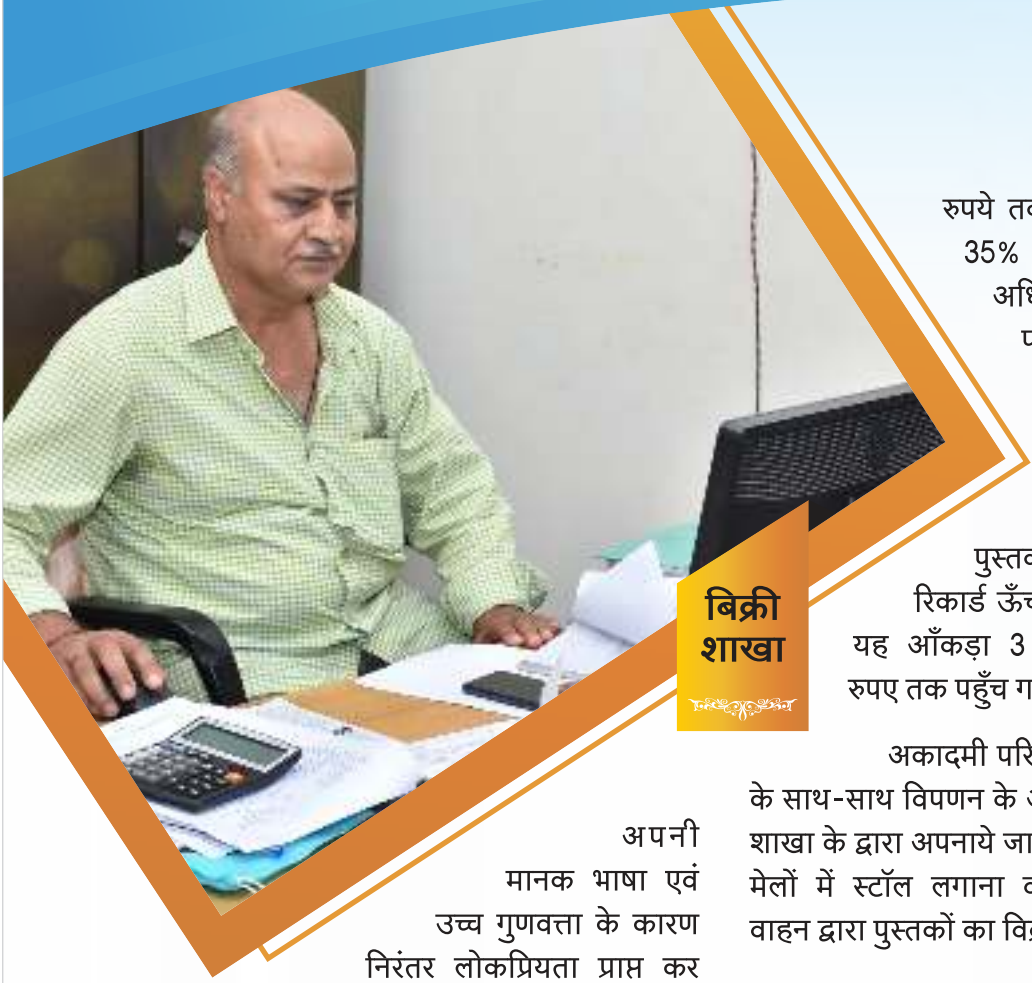

बिक्री शाखा

अपनी मानक भाषा एवं उच्च गुणवत्ता के कारण निरंतर लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं।

झालाना सांस्थानिक क्षेत्र स्थित अकादमी के परिसर में पुस्तक बिक्री की शाखा के लिए एक का बड़ा हिस्सा निर्धारित है। विद्यार्थी यहाँ से किसी भी कार्यदिवस पर पुस्तकें खरीद सकते हैं।

पुस्तकों की व्यक्तिगत खरीद पर 25% छूट का प्रावधान है। संस्थाओं को 20% कमीशन दिया जाता है। पुस्तक विक्रेताओं को 50 हजार रु. तक के क्रयादेश पर 30%, 50 हजार से 1 लाख रुपये तक के क्रयादेश पर 35% तथा 1 लाख से अधिक के क्रयादेश पर 40 प्रतिशत कमीशन देय है। पिछले कुछ अर्से के दौरान अकादमी की पुस्तकों की बिक्री ने रिकार्ड ऊँचाई को छुआ और यह आँकड़ा 3 करोड़ 71 लाख रुपए तक पहुँच गया।

अकादमी परिसर से सीधे विक्रय के साथ-साथ विपणन के अन्य तरीके भी इस शाखा के द्वारा अपनाये जाते हैं - जैसे पुस्तक मेलों में स्टॉल लगाना व चल-प्रदर्शनी वाहन द्वारा पुस्तकों का विक्रय।

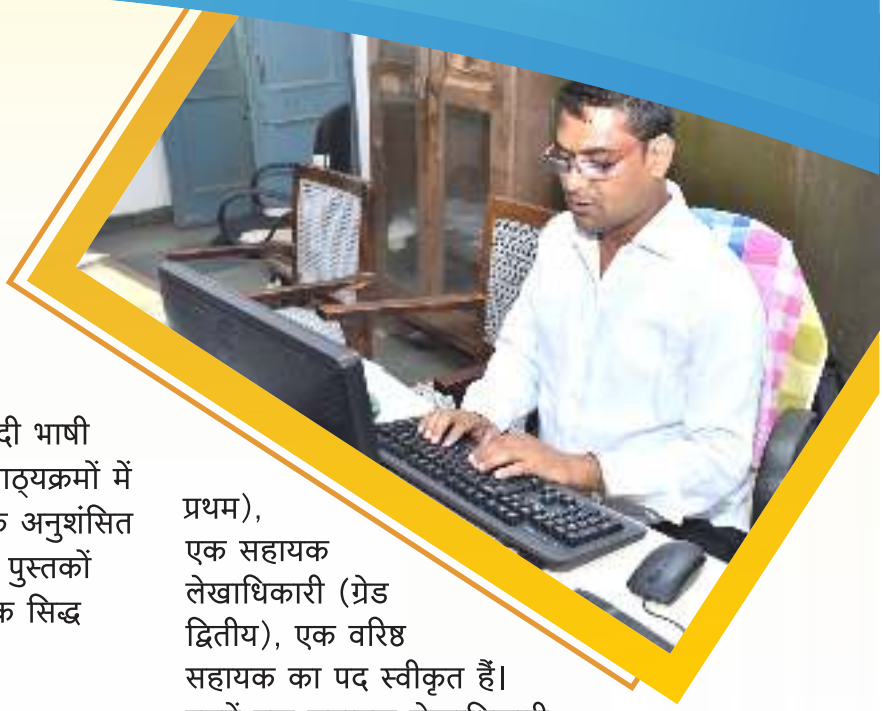

राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में अकादमी की पुस्तकें अनुशंसित हैं। इसके अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा एवं दिल्ली सहित हिन्दी भाषी प्रदेशों के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी अकादमी की अनेक पुस्तकें अनुशंसित हैं। यह तथ्य भी अकादमी की पुस्तकों की बिक्री को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।

5. लेखा शाखा :

इस शाखा के अंतर्गत एक सहायक लेखाधिकारी (ग्रेड प्रथम), एक सहायक लेखाधिकारी (ग्रेड द्वितीय), एक वरिष्ठ सहायक का पद स्वीकृत हैं। इसमें एक सहायक लेखाधिकारी (ग्रेड प्रथम), एक सहायक लेखाधिकारी (ग्रेड द्वितीय), राज्य सरकार से प्रतिनियुक्ति पर आते हैं। इस शाखा का कार्य अकादमी के लेखा संबंधी दस्तावेजों का उपयुक्त संधारण करना व उन्हें अद्यतन एवं दुरुस्त रखना है।

अकादमी में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण

छायाचित्र	क्र.सं.	नाम	पद
	1.	**डॉ. बजरंग लाल सैनी**	निदेशक
	2.	**डॉ. पूनम गुप्ता**	भाषा सम्पादक
	3.	**श्री गोपाल लाल जाट**	सहायक लेखाधिकारी ग्रेड प्रथम
	4.	**श्री नाथूलाल शर्मा**	सहायक लेखाधिकारी ग्रेड प्रथम
	5.	**श्री सुनील दत्त माथुर**	प्रकाशन सहायक
	6.	**श्री चन्द्रदत्त शर्मा**	कम्प्यूटर प्रोग्रामर
	7.	**श्री अनिल नाटाणी**	सहायक प्रशासनिक अधिकारी
	8.	**श्री सुनील अरोड़ा**	वरिष्ठ सहायक

छायाचित्र	क्र.सं.	नाम	पद
	9.	**श्री सत्यनारायण सिंह**	कनिष्ठ सहायक
	10.	**श्री तेज सिंह राठौड़**	कनिष्ठ सहायक
	11.	**श्री श्योजीराम जाट**	कनिष्ठ सहायक
	12.	**श्री रविशंकर बारी**	कनिष्ठ सहायक
	13.	**श्री रघुनाथ सिंह**	वाहन चालक
	14.	**श्रीमती कमला देवी**	चर्तुथ श्रेणी कर्मचारी
	15.	**श्री दिनेश कुमार शर्मा**	चर्तुथ श्रेणी कर्मचारी
	16.	**श्री सुरेश चन्द्र सैन**	चर्तुथ श्रेणी कर्मचारी

प्रगति प्रतिवेदन

वित्तीय वर्ष 2018-19

केन्द्र प्रवर्तित योजना

भारत सरकार ने प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के बाद सन् 1968 में उच्च शिक्षा के माध्यम परिवर्तन पर बल दिया था। भारत सरकार की इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों की पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन एवं विपणन किया जाना था। इसके लिए हिन्दी प्रदेशों में ग्रन्थ अकादमियों एवं हिन्दीतर प्रदेशों में पाठ्य पुस्तक–निर्माण मण्डलों का गठन किया गया था। सन् 1969 में एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना हुई।

उद्देश्य

अपनी स्थापना से यह अकादमी हिन्दी माध्यम में उच्चशिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिए विज्ञान, तकनीकी, मानविकी, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षा आदि विषयों की पठन सामग्री उपलब्ध करवाती है। इस पठन सामग्री में पाठ्य पुस्तकें हैं तो सन्दर्भ ग्रन्थ भी हैं।

उपादेयता

अकादमी 'न लाभ – न हानि' के सिद्धान्त पर पुस्तकें प्रकाशित करती है ताकि कम कीमत की इन पुस्तकों को अधिक से अधिक विद्यार्थी खरीद सकें। पुस्तकें विषय विशेषज्ञों के द्वारा लिखी जाती हैं ताकि गुणवत्ता कायम रहे।

मौलिक पुस्तकों का वर्षवार प्रकाशन

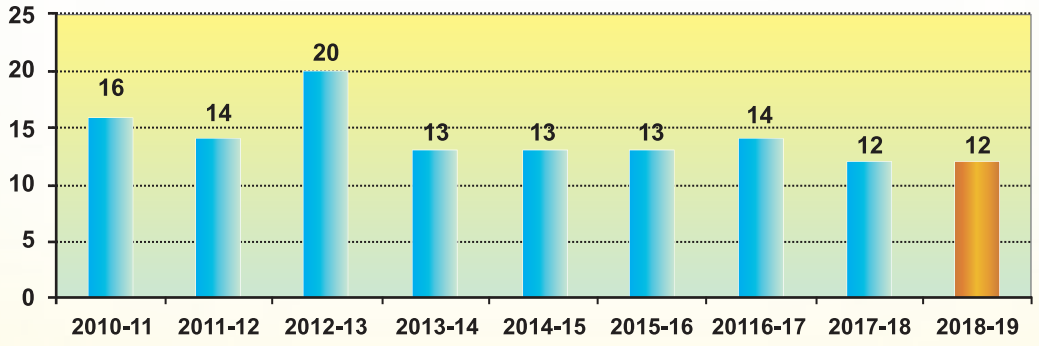

पानी बचाओ - बिजली बचाओ, बेटी पढ़ाओ - बेटी बचाओ

वित्तीय वर्ष 2018–19 में 12 मौलिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। अकादमी ने विज्ञान, तकनीकी, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षा आदि विषयों की कुल 656 मौलिक एवं 90 अनूदित पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

परिष्कृत पुस्तकों का पुनर्मुद्रण

विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमानुसार नयी पाठ्यपुस्तकों के लेखन एवं प्रकाशन के साथ पूर्व प्रकाशित पुस्तकों में संशोधन का कार्य अनवरत चलता रहता है। पुस्तक के पुनर्मुद्रण से पूर्व लेखकों से विषय, भाषा एवं प्रस्तुति के सन्दर्भ में अपेक्षित संशोधन करवाये जाते हैं ताकि विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु स्तरीय सामग्री उपलब्ध हो सके। वित्तीय वर्ष 2018–19 में 84 संस्करण प्रकाशित किये जा चुके हैं।

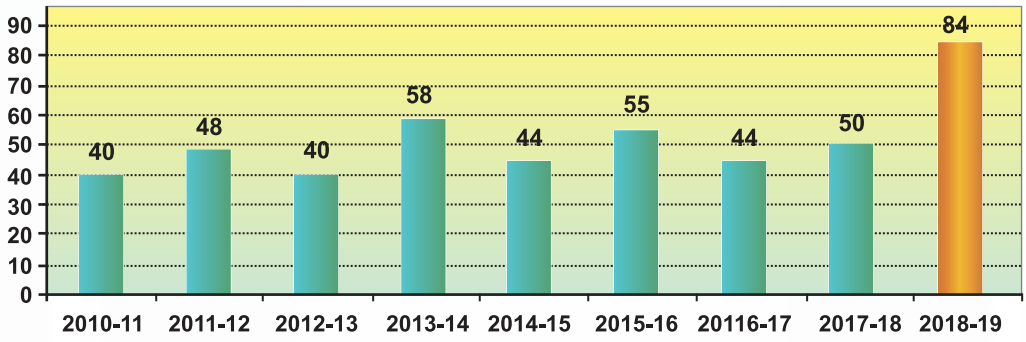

बिक्री में बढ़ोत्तरी

अकादमी ने बिक्री का अपना तंत्र विकसित कर लिया है जिससे सभी हिन्दी प्रदेशों में अकादमी की पुस्तकें बिक रही हैं। वित्तीय वर्ष 2018–19 में रिकार्ड 3,71,29,190/– रुपये की बिक्री की गई है।

वर्षवार कुल बिक्री (लाख रुपये में)

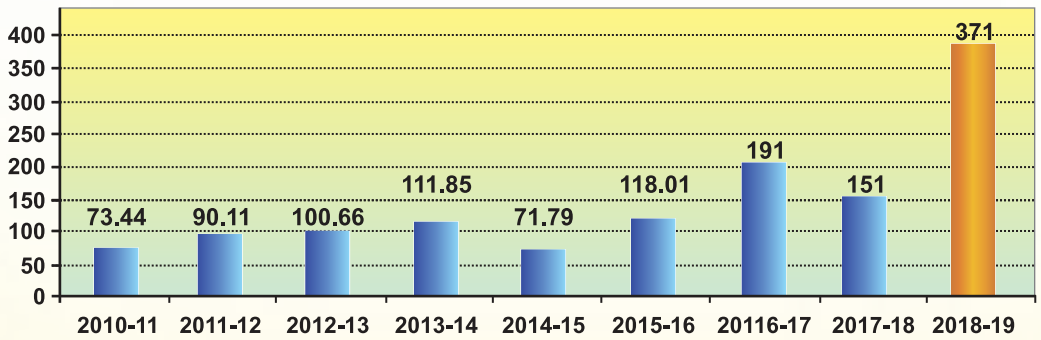

वित्तीय संसाधन

पुस्तक प्रकाशन हेतु भारत सरकार से प्राप्त अनुदान

अकादमी द्वारा करवाये जाने वाले पुस्तक प्रकाशन के कार्यों का शत–प्रतिशत व्यय भारत सरकार के अनुदान से संभव होता है। भारत सरकार ने चौथी पंचवर्षीय योजना में एक करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया था जो अकादमी की मांग के अनुसार बजट आधार पर प्रतिवर्ष आगामी पंचवर्षीय योजनाओं तक दिया जाता रहा। वर्ष 1994 की अवधि तक यह 1.00 करोड़ की रुपये राशि प्राप्त हो चुकी थी। पुस्तकों की बिक्री से प्राप्त राशि का रिवाल्विंग फंड बनवाया गया था जिससे आगामी संस्करण प्रकाशित कराये जा सकें तथा हिन्दी माध्यम में उच्च शिक्षा पाने वाले प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों की मानक पाठ्य पुस्तकों एवं सन्दर्भ ग्रन्थों को हिन्दी में तैयार करवाने के लिए धन की कमी न रहे।

अकादमी के पास उपलब्ध इस फंड के अलावा पुस्तक प्रकाशन के लिए केन्द्र सरकार (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के अधीन वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग से प्रतिवर्ष अलग से भी अनुदान प्राप्त होता है। वित्तीय वर्ष 2018–19 में रु. 30.00 लाख का अनुदान स्वीकृत किया गया है। इस राशि का पूर्ण उपयोग किया जा चुका है।

राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान राशि (लाख रुपये में)

राज्य सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान के रूप में वित्तीय वर्ष 2018–19 में रुपये 151.20 लाख का प्रावधान था, जिसमें से मार्च, 2019 तक गैर आयोजना मद में रुपये 151.20 लाख प्राप्त हो गए हैं तथा पूर्ण राशि का व्यय हो चुका है। आयोजना मद में रुपये 2.76 लाख प्राप्त हुए हैं जिसमें से रुपये 1.85 लाख का व्यय हुआ है।

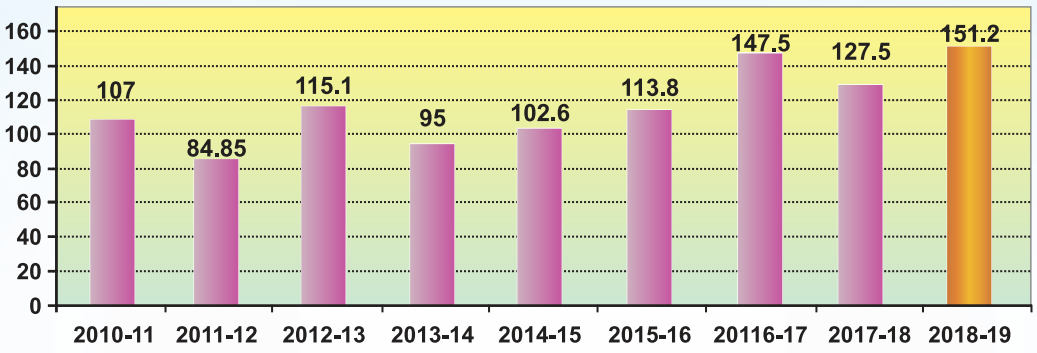

रॉयल्टी का ऑनलाइन लेखा–जोखा : देश का एकमात्र ऐसा पारदर्शी प्रकाशनगृह

लेखन के पारिश्रमिक स्वरूप अकादमी अपने लेखकों को 20 प्रतिशत रॉयल्टी प्रदान करती है। यह हर्ष का विषय है कि रॉयल्टी के सही–सही भुगतान के संदर्भ में अकादमी ने लेखकों का विश्वास अर्जित किया है।

वर्ष 2005–06 से भुगतान में पारदर्शिता एवं लेखकों की सुविधा के लिए रॉयल्टी का प्रतिदिन का लेखा अकादमी की वेबसाइट पर रखने का प्रावधान किया गया। अब अकादमी के लेखक जब चाहें, अपनी पुस्तक की बिक्री व रॉयल्टी का लेखा घर बैठे देख सकते हैं। इस तरह की सुविधा प्रदान करने वाला यह देश का एकमात्र संस्थान है। वर्ष 2018–19 की रॉयल्टी की राशि का लेखकों के खाते में ऑनलाइन भुगतान किया जा चुका है।

वर्षवार कुल रॉयल्टी (लाख रुपये में)

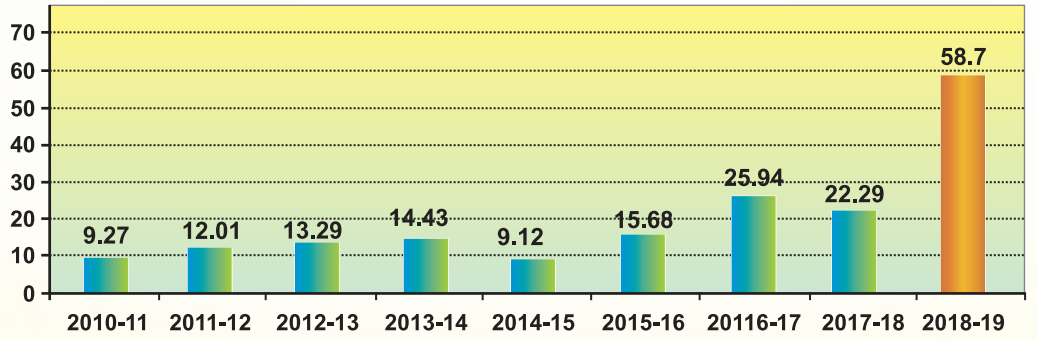

रचनात्मक गतिविधियाँ

पुस्तक मेले एवं प्रदर्शनियाँ

अकादमी द्वारा वित्तीय वर्ष 2018–19 के दौरान राजस्थान के लगभग 20 राजकीय महाविद्यालयों में पुस्तक पर्व का आयोजन किया गया।

अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष प्रदेश के विभिन्न राजकीय व निजी महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पुस्तक प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं जिनमें छात्रवर्ग, शिक्षक, लेखकगण तथा स्थानीय प्रबुद्ध लोग भाग लेते हैं। प्रदेश में राजस्थान पत्रिका एवं दैनिक भास्कर द्वारा लगाई गई पुस्तक प्रदर्शनियों तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित पुस्तक मेलों में भी अकादमी भाग लेती है।

'हिन्दी बुनियाद' का प्रकाशन

अकादमी द्वारा 'हिन्दी बुनियाद' (द्वैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका ने प्रकाशन के अल्पकाल में ही राजस्थान के शिक्षा जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। विभिन्न स्थायी स्तंभों के अंतर्गत प्रकाशित शोधपूर्ण आलेखों के साथ-साथ समसामयिक विषयों पर लिखी गई रचनाओं को भी पत्रिका में पर्याप्त स्थान दिया जाता है।

रामानंद राठी
संपादक

यह पत्रिका राजस्थान के लगभग समस्त राजकीय महाविद्यालयों एवं अन्य सांस्कृतिक संस्थानों में भेजी जाती है। इसके वर्तमान संपादक **श्री रामानंद राठी** हैं।

पुस्तक यात्रा :

सन् 2004 की शुरुआत में अकादमी द्वारा पुस्तक यात्रा भी राजस्थान के विभिन्न जिलों में भेजी गई थी। बीस से अधिक नगरों के महाविद्यालयों एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों में पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर इस पुस्तक यात्रा में अकादमी की पुस्तकों का विक्रय किया गया। यह पुस्तक यात्रा अकादमी के चल-प्रदर्शनी वाहन के साथ रवाना की गई थी और प्रचार-प्रसार की सुविधा के लिए दैनिक अखबार 'राजस्थान पत्रिका' को भी इस पुस्तक यात्रा में संयुक्त सहभागी के रूप में शामिल किया गया था। यह पुस्तक यात्रा न केवल विपणन की दृष्टि से बल्कि अकादमी की पुस्तकों के परिचय क्षेत्र को छोटे शहरों तक बढ़ाने में भी कामयाब रही थी। अकादमी की ओर से जगह-जगह पर विद्यार्थियों के बीच संगोष्ठियों का आयोजन भी इस पुस्तक-यात्रा के दौरान किया गया था। अकादमी का प्रतिनिधित्व इस यात्रा के दौरान प्रतिष्ठित लेखक श्री रामानंद राठी ने किया था।

कम्प्यूटरीकरण

अकादमी ने नयी पहल करके अपने कामकाज को अद्यतन बनाया है। विभिन्न शाखाओं के काम को लगभग कम्प्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा अकादमी परिसर wifi है। इस प्रकार अपने कामकाज, प्रकाशन एवं बिक्री की दृष्टि से अकादमी उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

इन्टरनेट का इस्तेमाल करने वालों के लिए अकादमी की वेबसाइट www.rajhga.com पर प्रकाशन सूची, लेखकों के लिए दिशा–निर्देश, **लेखकों की रॉयल्टी का विवरण**, बिक्री के नियम के अलावा अन्य जानकारियाँ भी उपलब्ध हैं। पिछले 14 वर्ष से यह वेबसाइट बराबर इन्टरनेट पर है और इसको आदिनांक रखा जाता है। अकादमी की वेबसाइट पर पुस्तकों के क्रय की ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध है।

पूर्व निदेशकों की कलम से...

डॉ. आर.डी. सैनी

डॉ. वेद प्रकाश

डॉ. राघव प्रकाश

डॉ. अनीता नायर

डॉ. आर.डी. सैनी
पूर्व निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

शुभकामना संदेश

विदित हुआ कि उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की पालना में स्थापित राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रही है। इसके लिए मैं हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

इस अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हिन्दी भाषी प्रदेशों के विश्वविद्यालयों के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में अनुशंषित हैं। इससे प्रमाणित होता है कि अकादमी ने हिन्दी माध्यम से उच्चशिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय कार्य किया है जिसके लिए वह साधुवाद की पात्र है।

संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ मैं आश्वस्त हूँ कि वह अपनी समृद्ध परम्परा को बनाये रखेगी।

– डॉ. आर.डी. सैनी

डॉ. वेद प्रकाश
पूर्व निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण कर रही है। इस अवधि में अकादमी ने हिन्दी माध्यम परिवर्तन की दिशा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रंथ निर्माण योजना के तहत विभिन्न विषयों के उत्कृष्ट ग्रंथों के हिन्दी अनुवाद तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक स्तर के मौलिक ग्रन्थों को हिन्दी में प्रकाशित कर उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं हिन्दी के अन्य पाठकों को लाभान्वित किया है।

इस महत्वपूर्ण कार्य के द्वारा हिन्दी पाठकों की सेवा का अवसर मुझे 1990 के दशक के प्रारम्भ में प्राप्त हुआ। मैंने जब पदभार सम्भाला तो अकादमी किराए के मकान में चलती थी किन्तु मेरे मन में था कि अकादमी का अपना भवन होना चाहिये। अतः काफी दौड़भाग के पश्चात जयपुर विकास प्राधिकरण से जमीन आवंटित करवाई। तत्पश्चात आवश्यक धनराशि का प्रावधान करवाकर झालाना क्षेत्र में राजस्थान राज्य सड़क एवं पुल निगम के माध्यम से अकादमी के वर्तमान भवन का निर्माण करवाया।

मेरे कार्यकाल के दौरान अकादमी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी.टी.) के सहयोग से 1999 में एक विशाल राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन था। राजापार्क के दशहरा मैदान में आयोजित इस मेले का उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल द्वारा किया गया था।

1990 का दशक अकादमी के लिए महत्वपूर्ण गतिविधियों से परिपूर्ण था। किन्तु अकादमी के लिए यह प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करना सम्भव नहीं होता यदि राज्य सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; अकादमी के लेखकों एवं स्टाफ का पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं होता।

अकादमी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

— डॉ. वेद प्रकाश

डॉ. राघव प्रकाश
पूर्व निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

स्वर्णिम अनुभव का दौर

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी मेरे लिए गुरुकुल रही है। अक़ादमी में आने से पहले मैं सीमित से अनुभव के साथ राजस्थान के विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में हिंदी विषय के व्याख्याता के रूप में कार्य करता रहा था। अक़ादमी ने मुझे पहली बार प्रशासनिक अनुभव दिया; अपने अध्ययन–अध्यापन विषय से बाहर निकालकर विज्ञान, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, कृषि, विधि आदि संकायों एवं इनके विविध विषयों की एकेडेमिक समझ दी; पुस्तक–व्यवसाय के लेखन–मुद्रण–प्रकाशन–विक्रय की आधारभूत समझ दी और उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम की ज़रूरत, चुनौतियाँ और संभावनाएँ स्पष्ट कीं। मैंने अकादमी 1984 में सहायक निदेशक के पद पर प्रतिनियुक्ति के बतौर अकादमी कार्यग्रहण किया और एक वर्ष बाद ही, परिस्थितिवश, मुझे कार्यवाहक निदेशक का कार्यभार मिल गया जो मई, 1991 तक जारी रहा। अकादमी के सात वर्ष के इस कार्यकाल ने मेरे सोच, सामर्थ्य और कार्यशैली को आमूलचूल बदल कर रख दिया।

स्वर्ण जयन्ती के इस अवसर पर अक़ादमी की साधारण सभा एवं कार्यकारिणी के अध्यक्षों – श्री भैरोंसिंह शेखावत (तत्कालीन मुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री), श्री हीरालाल देवपुरा (तत्कालीन उच्च शिक्षा मंत्री), श्रीमती सुमित्रा सिंह (तत्कालीन उच्च शिक्षा मंत्री), श्री रणजीत सिंह कूमट (तत्कालीन उच्च शिक्षा शासन सचिव); इन समितियों के विभिन्न सदस्यों, विशेष रूप से प्रो. आर.सी. मल्होत्रा, श्री तेजकरण डंडिया, प्रो. जे.एल. बंसल, श्री लक्ष्मीनारायण नाथूरामका; विभिन्न सम्माननीय लेखकों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के विभागाध्यक्षों और अक़ादमी के मेरे सभी सहयोगी अधिकारियों–कर्मचारियों को यथायोग्य अत्यंत सम्मान और स्नेह के साथ याद करता हूँ। मैं अकादमी के वर्तमान निदेशक डॉ. बी.एल. सैनी एवं भाषा संपादक डॉ. पूनम गुप्ता के प्रति भी स्नेह अर्पित करता हूँ जिनके आग्रह ने इस आलेख के द्वारा मुझे अक़ादमी के उस स्वर्णिम अतीत को फिर से याद करने का अवसर प्रदान किया।

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अक़ादमी एवं उसमें कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ।

– डॉ. राघव प्रकाश

डॉ. अनीता नायर
पूर्व निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

शुभकामना संदेश

15 मार्च 2017..... इसी दिन मैंने राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की प्रथम महिला निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। मेरी माताजी को विरासत में मिला चिर–पोषित स्वप्न था कि 'हिन्दी की सेवा–सुश्रूषा में उनका कोई योगदान हो, क्योंकि केरल के 'वैक्यम सत्याग्रह' में गाँधीजी के सफल नेतृत्व में कार्य करने वाले श्री शंकरन नायर मेरे नाना थे। उसी दौरान गाँधीजी ने केरल में 'हिन्दी प्रचार' की मशाल जलाई थी। उसी प्रेम की इसी धरोहर को संजाऐ हुए मैंने राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी में कार्य करने का प्रयास किया।

लगभग दो वर्ष के कार्यकाल में अकादमी परिवार के साथ मिलकर मैंने 'गाँधी डायरी' की ही तर्ज पर 'अकादमी दर्पण' की शुरुआत की। इसमें वि.सं. 2075 युगाब्द 5120 तदनुसार सन 2018–19 की डायरी नव संवत्सर को आधार बनाकर छपवायी। जिसमें 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' की महत्ता को सूत्रवाक्य में स्वर्णाक्षरों में हर एक पृष्ठ पर संजोया है। हमारे राष्ट्रपिता की मान्यता थी कि ''विदेशी सभ्यता और संस्कृति की आँधी में कहीं अपना 'घर' ही न उड़ा दिया जाए'', इसीलिए वैश्वीकरण की आँधी के इस दौर में अपनी भाषा 'हिन्दी' के अधिकाधिक प्रचार–प्रसार का प्रयास किया।

इस प्रयास–प्रक्रिया के कई चरण रहे.....जिसमें 10 जनवरी को विश्व–हिन्दी–दिवस मनाया जाना भी शामिल रहा। 14 सित. का 'हिन्दी–दिवस' या समय–समय पर अन्यान्य अनेक संगोष्ठियों एवं परिचर्चाओं का आयोजन भी इसका हिस्सा बने। कई वर्षों के अन्तराल के बाद तकनीकी शब्दावली आयोग के साथ मिलकर 'मानक शब्दावली में प्रबन्धन' जैसे विषय पर हिन्दी में कार्यशाला का आयोजन– अनुभव अपने आप में अभूतपूर्व रहा।

अपने कार्यकाल की उपलब्धि के रूप में मुझे जो बात गौरवान्वित करती है, वह मैं आपसे साझा करना चाहती हूँ। वह है अकादमी के 50 वर्षों के इतिहास में पहली बार 'पत्रिका–प्रकाशन' प्रारंभ होना। अकादमी परिवार के मेहनती सदस्यों के अनथक प्रयासों के परिणामस्वरूप एक द्विमासिक पत्रिका को प्रकाशित किया गया। बहुत सारे नामों की चर्चा– विश्लेषण के उपरान्त मुझे 'हिन्दी–बुनियाद' शीर्षक सर्वाधिक सटीक लगा। हिन्दी के विश्वव्यापी प्रसार को लक्षित कर इस पत्रिका को हमने निःशुल्क बनाए रखते हुए इसके माध्यम से 'राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी' को सुदूर पूर्वी–दक्षिणी अंचलों तक पहुँचाने का प्रयास किया।

इसी दौरान राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के लिए एक और बात बहुत महत्वपूर्ण रही। 18–20 अगस्त 2018 के बीच मॉरीशस में आयोजित 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विदेश मन्त्री के नेतृत्व में हमें पहली बार भारत सरकार के प्रतिनिधि मण्डल में शामिल किया गया। इतना ही नहीं विशेष विमान से इस प्रतिनिधि मण्डल के जाने की व्यवस्थाओं के साथ–साथ अकादमी की पुस्तकों की स्टॉल लगाए जाने का आमंत्रण भी विदेश मंत्रालय से प्राप्त हुआ। ये अलग बात है कि कुछेक व्यावहारिक समस्याओं के कारण अकादमी द्वारा इसमें सम्मिलित होना संभव नहीं हो सका।

बहरहाल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी सदा–सर्वदा प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहे .....

कोटिशः शुभकामनाओं के साथ!

– डॉ. अनीता नायर

प्रज्ञा पुरस्कार

अकादमी के जिन लेखकों की पुस्तक के 15 अथवा अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, प्रज्ञा पुरस्कार उन लेखकों को दिया जाता है। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के अन्तर्गत 51,000 रुपये की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

प्रज्ञा पुरस्कार से सम्मानित लेखक

डॉ. हरिमोहन सक्सेना

डॉ. रीता प्रताप

डॉ. ममता चतुर्वेदी

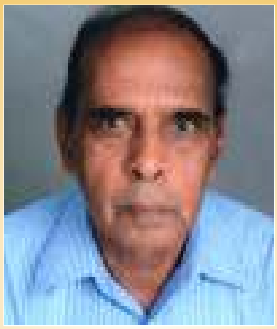

डॉ. हरिमोहन सक्सेना
से.नि. संयुक्त निदेशक,
कालेज शिक्षा, राज.

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के सफल पचास वर्ष पूर्ण होना एक सरकारी प्रकाशन संस्थान के लिये गौरव एवं प्रसन्नता का अवसर है। अकादमी की स्थापना जिस उद्देश्य से की गई थी (अर्थात् विश्वविद्यालयी/उच्च शिक्षा हेतु उच्चस्तरीय पाठ्य पुस्तकों एवं अन्य मौलिक ग्रन्थों का हिन्दी में प्रकाशन, विगत पांच दशकों से उस कार्य को यह संस्था निर्बाध रूप से संपन्न कर रही है ।

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से मेरा जुड़ाव 1980 में ही हो गया था, जब मेरी प्रथम पुस्तक 'मानसून एशिया' का प्रस्ताव प्रेषित किया गया था, जिसका प्रकाशन 1983 में हुआ। इसके पश्चात् नियमित रूप से लेखक एवं विषयनामिका के सदस्य के रूप में मैं अकादमी से सक्रिय रूप में सम्बन्धित रहा और यह क्रम अभी भी जारी है। अकादमी से मेरी अन्य प्रकाशित पुस्तकें हैं– पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी भूगोल (1994, चौथा संस्करण –2019) पर्यावरण एवं प्रदूषण (1998, पाँचवाँ संस्करण – 2014), राजस्थान का भूगोल (1998, 36वां संस्करण–2019), आर्थिक भूगोल (2010, तृतीय संस्करण– 2019)। मुझे प्रसन्नता है कि मेरी सभी पुस्तकों को पाठकों ने अपनाया । इसमें विशेष उल्लेखनीय 'राजस्थान का भूगोल' पुस्तक है जिसका 36वां संस्करण 2019 में प्रकाशित हो चुका है। समस्त पुस्तकों, विशेषकर राजस्थान के भूगोल की लोकप्रियता का कारण एक ओर जहाँ पुस्तक में दी गई नवीनतम जानकारियाँ हैं तो दूसरी ओर अकादमी की सक्रिय भूमिका भी है।

मेरा विषय भूगोल है, इस विषय से सम्बन्धित अकादमी की सभी पुस्तकें स्तरीय पाठ्यपुस्तकें हैं, जो स्नातक/स्नातकोत्तर, भूगोल एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये उपयोगी हैं। हिन्दी माध्यम की पुस्तकों में ये श्रेष्ठ उपलब्ध पुस्तकें हैं, जो न केवल विद्यार्थियों अपितु शिक्षकों तथा जनसाधारण के लिये भी उपयोगी हैं।

अकादमी की पुस्तकों का स्तरीय होने का प्रमुख कारण इसकी पुस्तक लेखक/ प्रकाशन की प्रक्रिया है। इसके

अन्तर्गत लेखक से प्रस्ताव आमंत्रण के पश्चात इसकी समीक्षा विषयनामिका के विशेषज्ञों द्वारा करवाई जाती है और अनुमोदन के पश्चात् ही लेखन की स्वीकृति दी जाती है। तत्पश्चात् पाण्डुलिपि प्राप्त होने पर विशेषज्ञ उसकी समीक्षा करता है, सुझाव देता है तथा स्वीकृति प्रदान करता है। इसके उपरान्त ही पुस्तक का प्रकाशन होता है। मैंने स्वयं भी अनेक पाण्डुलिपियों की समीक्षा की है, जिसमें सुझावों/संशोधनों के साथ कुछ को अस्वीकृत भी किया है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के कारण ही पुस्तकों की गुणवत्ता बनी रहती है।

अकादमी ने जहाँ एक ओर छात्रों के हितों का ध्यान रखकर कम मूल्य में पुस्तकों को उपलब्ध कराया है, वहीं दूसरी ओर लेखकों के गौरव एवं सम्मान को भी ध्यान में रखा है। लेखकों को 20 प्रतिशत की रॉयल्टी नियमित और समय पर देना एक बहुत अच्छी परम्परा है जिसे अकादमी निभा रही है। इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय है पारदर्शिता, अर्थात लेखक को यह ज्ञात होता रहता है कि उसकी कितनी पुस्तकों का विक्रय हुआ । अकादमी कार्यालय अपनी वेबसाइट पर नियमित रूप से रॉयल्टी की सूचना डालता रहता है। यह कदम भावी लेखकों को भी पुस्तक लेखन हेतु प्रेरित करता है।

जब भी जयपुर जाना होता है, अकादमी भी अवश्य ही जाना होता है। वहाँ निदेशक, अधिकारियों और कर्मचारियों से मिलने का सदैव सुखद अनुभव रहा है। वास्तव में अकादमी के अधिकारियों और कर्मचारियों की निष्ठा और कार्यप्रणाली तथा कुशल नेतृत्व का ही प्रतिफल है कि यह प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर हो रही है। ये सभी प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं।

विगत वर्षों में अकादमी द्वारा आयोजित 'पुस्तक पर्व' विशेष उल्लेखनीय है। इसके अलावा राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों में पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं। इन प्रयासों से अकादमी की पुस्तकों की लोकप्रियता में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है, वह भविष्य में भी उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर बधाई और शुभकामनाएँ।

– डॉ. हरिमोहन सक्सेना

डॉ. रीता प्रताप

प्रत्येक देश की अपनी निजी संस्कृति होती है जिसका स्वरूप उसके साहित्य एवं कलाकृतियों में प्रतिबिम्बित होता है। कला की इस निरन्तर प्रवाही धारा को विश्व के समस्त देशों ने अपने–अपने विशिष्ट योगदान द्वारा समृद्ध बनाया है। विश्व चित्रकला के इतिहास को भारत की चित्रकला एवं मूर्तिकला तथा चीन, जापान, फारस एवं यूरोप की कला का अभूतपूर्व योगदान रहा है। वर्तमान में देश एवं राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में अकादमी द्वारा प्रकाशित कला की 150 से अधिक पुस्तकें अनुशंसित हैं।

इसी कड़ी में मेरी तीन पुस्तकें भी अकादमी द्वारा प्रकाशित की गयी हैं। 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास', 'सुदूर पूर्व की कला', एवं 'जयपुर की चित्रांकन परम्परा'।

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी का यह स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। इस शुभ अवसर पर अकादमी के सभी परिवारजन को मेरी शुभकामनाएँ।

मैं अकादमी के पूर्व निदेशक डॉ. आर. डी. सैनी एवं वर्तमान निदेशक डॉ. बी. एल. सैनी तथा सभी कार्यरत महानुभावों की आभारी हूँ जिनके अथक प्रयासों से इन ग्रन्थों का सुचारु रूप से नवीनीकरण एवं प्रकाशन हो रहा है। यह अत्यन्त गर्व की बात है कि अकादमी द्वारा मुझे उपरोक्त पुस्तकों की सालाना रॉयल्टी लाखों में प्राप्त होती है। अकादमी की वेबसाइट पर पुस्तक विक्रय का लेखा–जोखा हमेशा अद्यतन रहता है। अकादमी की यही पारदर्शिता लेखकों को आकर्षित करती है। एक प्रतिष्ठित लेखक निजी प्रकाशनों की अपेक्षा अकादमी के सुरक्षात्मक एवं पारदर्शी वातावरण में लेखन कार्य कर गौरवान्वित होता है।

अकादमी दिन–प्रतिदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर हो, इन्हीं शुभकामनाओं सहित !

– रीता प्रताप

डॉ. ममता चतुर्वेदी

सह आचार्य, चित्रकला
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर।

सन् 1997 की बात है जब मैं एक ऐसे संस्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रयासरत थी जो विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी भाषा में राज्य सरकार के स्तर पर पुस्तक प्रकाशन करता हो। इसी समय मुझे राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर के बारे में जानकारी मिली। तत्कालीन निदेशक डॉ. वेदप्रकाश थे जिनसे मिलकर मैंने पहली बार अपनी पाण्डुलिपि छपवाने हेतु प्रस्ताव दिया और पहली पुस्तक 'सौन्दर्यशास्त्र' प्रकाशित हुई। इस प्रकाशन का मेरा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के साथ बहुत अच्छा अनुभव रहा। इसके पश्चात् मेरी अन्य पुस्तकों 'पाश्चात्य कला', 'रामगोपाल विजयवर्गीयः एक शतब्दी की कलायात्रा', 'समकालीन भारतीय कला' तथा 'यूरोप की आधुनिक कला का प्रकाशन' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा हुआ। उस समय निदेशक डॉ. आर.डी. सैनी का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर की स्थापना 1969 ई. में की गयी थी। भारत सरकार ने प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् सन् 1968 में उच्च शिक्षा के माध्यम परिवर्तन हेतु एक राष्ट्रीय नीति के अन्तर्गत भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों हेतु विभिन्न विषयों की पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन तथा विपणन किया जाना निश्चित किया गया था । इसके लिये हिन्दीभाषी प्रदेशों में पाठ्य पुस्तक निर्माण मण्डलों का गठन किया गया। इसी क्रम में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की भी स्थापना जयपुर में हुई। इसका अपना स्वयं का प्रशासनिक भवन है। यह राजस्थान सरकार का एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसे राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी गत पांच दशकों से निष्ठापूर्वक सम्पादित कर रही है।

अकादमी मौलिक पाठ्य पुस्तकों व संदर्भ पुस्तकों की उपयोगिता बढ़ाने, हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार, पुस्तकों के माध्यम से हिन्दी के मानक स्वरूप का संवर्धन करने, कम मूल्य पर पुस्तकें उपलब्ध करवाने तथा लेखकों को सम्मानजनक मानदेय (रॉयल्टी) प्रदान करने हेतु निरन्तर प्रयासरत है। अकादमी की वेबसाइट पर पुस्तकों और लेखकों के बारे में जानकारी उपलब्ध है जो समय-समय पर अद्यतन होती रहती है। अपनी प्रत्येक पुस्तक का मानदेय (रॉयल्टी) लेखक इस वेबसाइट पर देख सकते हैं। निर्धारित समय पर नियमानुसार यथोचित मानदेय (रॉयल्टी) लेखकों को प्रदान करना भी अकादमी की महत्वपूर्ण विशेषता है जिसके लिए लेखकों को किसी पूछताछ हेतु अकादमी कार्यालय तक नहीं जाना होता। भाषा सम्पादन, कम्पोजिंग आदि कार्य अकादमी के स्तर पर करवाये जाते हैं।

मैं आशा करती हूँ कि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भविष्य में भी अपने उद्देश्यों, कर्त्तव्यों तथा योजनाओं की क्रियान्विति हेतु इसी भाँति प्रतिबद्ध रहेगी।

- डॉ. ममता चतुर्वेदी

प्रज्ञा पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत पुस्तकें

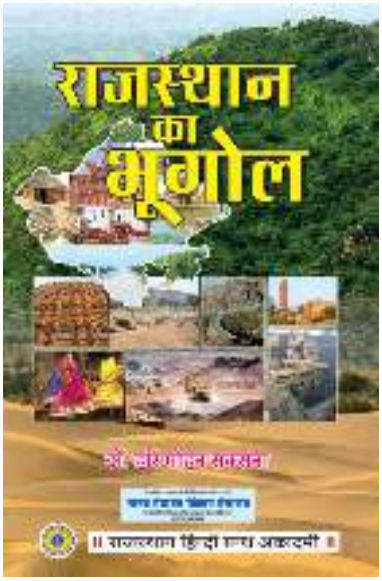

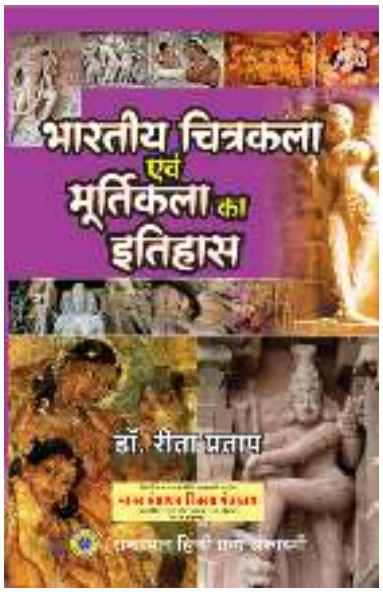

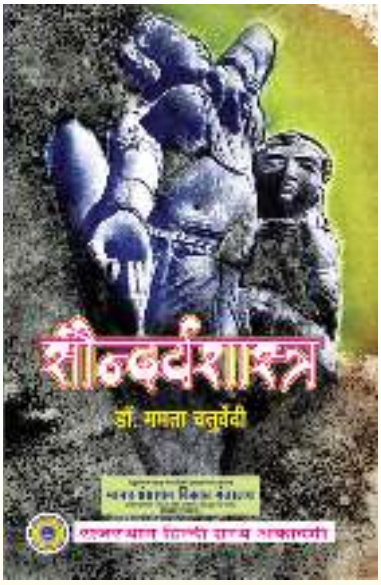

लेखकों
की कलम से...

डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर
डॉ. जी.एल. शर्मा
डॉ. राजेश कुमार व्यास

डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर

पूर्व विभागध्यक्ष, इतिहास
कॉलेज शिक्षा विभाग
राजस्थान, जयपुर

विगत दो दशक से भी अधिक समय से लेखक और समीक्षक के रूप में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की गतिविधियों से जुड़े होने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है।

उक्त समयावधि में मैंने अकादमी को निरन्तर उन्नति और विकास के पथ पर अग्रसर होते देखा है।

मेरी जानकारी के अनुसार सन् 1969 में अपनी स्थापना से ही यह अकादमी राजस्थान प्रदेश में उच्च शिक्षा के शिक्षार्थियों के लिए विभिन्न विषयों के प्रामाणिक और स्तरीय सन्दर्भ ग्रन्थों और पाठ्य पुस्तकों के लेखन, प्रकाशन और विपणन कार्य में पूरी निष्ठा एवं तत्परता से समर्पित भाव से निरन्तर क्रियाशील एवं संलग्न है। इस क्रम में अकादमी ने राजस्थान के इतिहास, साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान इत्यादि विभिन्न विषयों पर लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, विषय विशेषज्ञों द्वारा लिखित उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन कर शोधार्थियों/विद्यार्थियों/प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्रों को अपने द्वारा प्रकाशित उपयोगी पुस्तकों से लाभान्वित किया है और हिन्दी भाषा में अच्छी पुस्तकों के अभाव की पूर्ति करने का सफल प्रयास किया है।

अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की गुणवत्ता, आवरण, और साज–सज्जा, चित्र संयोजन तथा सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा शैली के कारण अनेक पुस्तकें पुरस्कृत और विद्वानों द्वारा समादृत हुई हैं।

प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक और सहारनीय भूमिका निभाने के लिए राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने अभिनव और स्तुत्य प्रयास किया है। इस हेतु अकादमी बधाई एवं साधुवाद की पात्र है। अकादमी द्वारा लेखकों को उनकी प्रकाशित पुस्तकों पर रॉयल्टी का भुगतान नियत समय पर एवं पूर्ण पारदर्शिता के साथ किया जाता है।

– डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर

डॉ. जी.एल.शर्मा

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी वास्तव में हिंदी भाषा में सृजनशील एवं स्तरीय लेखन तथा प्रकाशन का बेहतरीन मंच है। अकादमी के साथ मेरा बहुत सुखद अनुभव रहा है। लेखकों के लिए यह एक सरल, सहज और सुविधाजनक मंच है जिसमें वह अपने सृजनशील लेखन के माध्यम से विद्यार्थियों और सुधी पाठकों को लाभान्वित कर सकते हैं। अकादमी में कार्यरत श्री सुनील माथुर, डॉ पूनम गुप्ता, श्री तेज सिंह और अन्य सभी अधिकारी एवं कार्मिक बहुत ही सहज और सहयोगी भावना के साथ लेखकों एवं अन्य सभी आगंतुकों से रूबरू होते हैं।

मुझे खुशी है कि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जैसे लब्धप्रतिष्ठ संस्थान के साथ मैं जुड़ा और मेरी पुस्तक का प्रकाशन इस प्रगतिशील संस्था से संभव हो सका। अकादमी के वर्तमान निदेशक डॉ बजरंग लाल सैनी को मैं विशेष रूप से बधाई देता हूं, जिन्होंने पदग्रहण करने के पश्चात अपनी प्रशासनिक क्षमताओं से अल्प समय के अंदर अकादमी में एक समावेशी, शोधपूर्ण एवं एकेडमिक माहौल विकसित किया है ।

मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी सफलता की नई ऊंचाइयों को छुएगी तथा नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। अकादमी के स्वर्ण–जयन्ती पर्व के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ ...

– डॉ. जी.एल. शर्मा

डॉ. राजेश कुमार व्यास

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी ने बेहद महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन विगत वर्षों में किया है। कलाओं में साखलकरजी की पुस्तकें, राजस्थान के दुर्गों पर राघवेन्द्र मनोहर की पुस्तक, तथा जयसिंह नीरज, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, गोविन्द चंद्र पाडेय आदि की पुस्तकें गहन शोध–विश्लेषण लिए ऐसी पुस्तकें हैं कि मुझे लगता है, हरेक पाठक के लिए उपयोगी और हर पुस्तकालय में रखने योग्य हैं। मुझे इस बात पर गर्व होता है कि पुस्तक प्रकाशन की स्तरीय परम्परा में अकादमी ने मेरी भी 'भारतीय कला', 'पर्यटन उद्भव एवं विकास' तथा 'सांस्कृतिक राजस्थान' पुस्तकों का प्रकाशन किया है। हिन्दी में पर्यटन की पुस्तकें तो हैं परन्तु वे या तो शुद्ध साहित्यिक हैं या फिर अकादमिक घेरे में इस कदर आबद्ध हैं कि उनसे इस विषय को लेकर किसी प्रकार की समझ विकसित होती हो, ऐसा लगता नहीं है। मुझे लगा, पर्यटन पर भारतीय संस्कृति और भाारतीय परिवेश के अनुरूप जो कुछ हो रहा है और जो कुछ हुआ है, उस पर कुछ लिखा जाना चाहिए। सुखद लगा जब इस संबंध में तत्कालीन निदेशक डॉ. आर.डी. सैनी से चर्चा हुई। 'पर्यटन उद्भव एवं विकास' पुस्तक उसी की परिणति रही। सुखद अचरज यह भी हुआ कि इसे राजस्थान सरकार ने 'उत्कृष्ट' पुस्तक के बतौर सम्मानित किया।

अकादमी ने निरंतर बेहतरीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं। गत वित्तीय वर्ष की ही बात करें तो अकादमी ने वर्तमान निदेशक डॉ. बी.एल. सैनी की पहल पर लगभग 4 करोड़ रुपये मूल्य की पुस्तकों की बिक्री का नया रिकॉर्ड बनाया है। विज्ञान, कृषि, मानविकी, कला, शिक्षा, वाणिज्य, चिकित्सा और साहित्य की महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन इस दौरान हुआ है। इनमें पाठ्यपुस्तकों की श्रेणी की पुस्तकें हालांकि अधिक हैं परन्तु रोचक पहलू यह है कि अकादमी की साहित्य, कलाओं की पुस्तकों की बिक्री भी लाखों में हुई है। अकादमी ने अपने लेखकों को गत वित्तीय वर्ष में 60 लाख रुपये की रॉयल्टी प्रदान की है। अर्थात् पुस्तकें बिकी भी हैं और उन्हें लिखने वालों को भी लाभ हुआ है। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी को इस दृष्टि से देशभर की मिसाल कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

बहरहाल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से बहुत सी यादें जुड़ी हैं। पुस्तकों के पठन की, आयोजनों की और अपनी पुस्तकों के प्रकाशन और अकादमी के जरिए उनसे मिले हजारों–हजार पाठकों की भी। अकादमी स्तरीय पुस्तकों के प्रकाशन के साथ इसी प्रकार देशभर में अग्रणी बनी रहे, यही कामना है। आमीन!

– डॉ. राजेश कुमार व्यास

अकादमी की पुरस्कृत पुस्तकें

केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कृत पुस्तकें

पुरस्कृत पुस्तकें **पुरस्कार राशि**

1. अनुरंजनात्मक क्रियाएँ, शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य---------शिवकुमार शर्मा ---------1000/-

(सरदार बल्लभभाई पटेल प्रथम पुरस्कार)

2. प्रबन्धकीय लोक प्रशासन ----------डॉ. एस. एल. वर्मा, डॉ. बी. एम. शर्मा

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार), (मान पुरस्कार 2002)

3. विज्ञापन तकनीक एवं सिद्धान्त----------नरेन्द्र सिंह यादव--------5000/-

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार 2006)

4. ग्राफिक डिजाइन ----------नरेन्द्र सिंह यादव

5. अनुरूप इलेक्ट्रोनिक्स ----------प्रो. श्यामा चरण प्रसाद

6. वस्त्र एवं परिधान निर्माण के मूलाधार ----------डॉ. संगीता सक्सेना

7. खादी विकास एवं भावी स्वरूप ----------डॉ. संगीता सक्सेना

राज्य सरकारों द्वारा पुरस्कृत पुस्तकें

राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कृत

1. पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास योजनाएँ----------डॉ. बसन्ती लाल बाबेल----------1100/–
2. पर्यटन उद्‌भव एवं विकास ----------डॉ. राजेश कुमार व्यास----------10000/–

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

3. समस्थानिक ----------सत्यनारायण माथुर----------750/–
4. प्रावस्था नियम एवं उसके प्रयोग ----------वाई. के. गुप्ता----------500/–
5. आधुनिक भाषा विज्ञान की भूमिका ----------आर. पी. भटनागर, मोतीलाल गुप्त---------1000/–
6. दर्शन के प्रकार–हाकिंग ----------अनु.– रमेशचन्द्र शर्मा----------1000/–
7. प्रायोगिक वनस्पति, भाग–3 ----------एम. एम. भण्डारी ----------1000/–
8. उत्कृष्ट गैसें ----------दीनदयाल भटनागर----------2000/–
9. मुगल सम्राट शाहजहाँ ----------बनारसीप्रसाद सक्सेना ----------2000/–
10. तापनाभिकीय संलयन ऊर्जा----------श्यामलाल काकानी----------2000/–
11. कार्बनिक रसायन के कुछ आधारभूत सिद्धान्त----------सुरेशचन्द्र आमेटा ----------1000/–
12. उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन-------कालूराम शर्मा----------1500/–
13. रस गंगाधर ----------(कुमारी) चिन्मयी माहेश्वरी ----------3000/–
14. कतिपय अभिकर्मकों के कार्बनिक अभिक्रियाओं के उपयोग----------उम्मेदसिंह महनोत ----------2500/–
15. कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधियाँ----------सुरेशचन्द्र आमेटा ----------2500/–
16. अबेन्जनीय एरोमेटिक यौगिक ----------केसरीलाल मेनारिया ----------1000/–
17. पारिस्थितिकी परिचय----------देवेन्द्र प्रतापनारायण सिंह----------1000/–
18. अतिचालकता ----------श्यामलाल काकानी----------2500/–
19. यांत्रिकी गति विज्ञान----------गिरराजप्रसाद एवं ताराचन्द जैन ---------1000/–
20. तापभारमितीय विश्लेषण ----------के. सी. ग्रोवर ----------1000/–
21. रमन स्पेक्ट्रॉमिकी ----------महावीर सिंह मुर्डिया----------1000/–

विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद द्वारा पुरस्कृत

22. पादप पारिस्थितिकी और पादप भूगोल के मूल तत्त्व ----------बृज गोपाल, **(स्वामी हरिशरणानन्द स्वर्ण पदक)**

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा पुरस्कृत

23. भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र----------डॉ. एन. एल. अग्रवाल **(राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार 1978)**

24. फल तरकारी परिरक्षण प्रौद्योगिकी----------एस. सदाशिवन नायर----------1982

25. रोमन्थी जीवों के परजीवी रोग ----------डॉ. के. एम. एल. पाठक ----------1991—1993

26. मृदा विज्ञान ----------डॉ. कृष्ण कान्त व्यास, डॉ. एम. सी. भण्डारी, डॉ. शिवदयाल सिंह ----------1996—97

विधि न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

27. विधिक उपचार----------डॉ. प्रकाशचन्द जैन ----------10,000/—

28. दण्ड प्रक्रिया संहिता ----------डॉ. प्रकाशचन्द जैन

29. सम्पत्ति अन्तरण अधिनियम----------बी. एल. मान्धाना

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

30. पुलिस प्रशासन, अन्वेषण एवं मानवाधिकार ----------डॉ. बसन्तीलाल बाबेल ----------9,500/—

31. महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस----------डॉ. दीपा जैन

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

32. परिचयात्मक पर्यावरण जैविकी एवं वानिकी ----------वी. एस. सक्सेना, डॉ. हरिश्चन्द्र भारतीय, डॉ. अरविन्द भाटिया

(राष्ट्रीय ज्ञानविज्ञान पुस्तक लेखन पुरस्कार)

---

33. पर्यावरण परिरक्षण एवं वानिकी ----------वी. एस. सक्सेना ----------20,000/—

(इदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार)

---

34. वेब पत्रकारिता ----------श्याम माथुर ----------प्रोत्साहन पुरस्कार

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

35. प्रसूति परिचर्या ----------डॉ. विनया पेण्डसे ----------25,000/—

प्रताप साहित्य पुरस्कार, 2002

36. महाराणा प्रताप----------प्रो. आर. पी. व्यास ----------5,001/—

(प्रताप स्मारक समिति, उदयपुर द्वारा)

अकादमी की भावी योजनाएँ

पुस्तकों का मानकीकरण

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दकोश में किसी पारिभाषिक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। इन विषयों में शब्द का यह अर्थ बदलते संदर्भ से प्रभावित नहीं होता। मानविकी विषयों के लेखन में भी पारिभाषिक शब्दों के इस मानक स्वरूप को स्थिर करने के प्रयास हुए हैं। इन विषयों की मानक पाठ्य पुस्तकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे शब्दों के निश्चित अर्थ ही संप्रेषित करें।

इस प्रकार पाठ्य पुस्तकों एवं सन्दर्भ पुस्तकों के मानकीकरण का तात्पर्य होगा कि विषय की दृष्टि से प्रस्तुत किए जाने वाले तथ्य प्रामाणिक, तर्कयुक्त एवं सत्य पर आधारित हों जहाँ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत मानक शब्दावली का प्रयोग किया गया हो।

हिन्दी ग्रन्थ अकादमी अपने प्रकाशित ग्रन्थों में मानक शब्दावली के प्रयोग को प्राथमिकता देती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर 'पुस्तक लेखन में मानक शब्दावली'' विषय पर कार्यशालाओं का आयोजन भी करती है।

अकादमी की कार्ययोजना है कि विभिन्न विषयों पर प्रसिद्ध पुस्तकों का मानकीकरण करवाया जाए ताकि पाठकों को गुणवत्तायुक्त प्रामाणिक पठन सामग्री उपलब्ध हो सके।

मोनोग्राफ श्रृंखला का प्रकाशन

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना जुलाई, 1969 में हुई थी। अकादमी इस वर्ष स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन करने जा रही है। इस क्रम में यह आवश्यक है कि हमारी वर्तमान तथा भावी पीढ़ियाँ हमारे गौरवपूर्ण अतीत, स्वातंत्रता संग्राम में हमारे प्रदेश के अविष्मरणीय योगदान, अन्यान्य क्षेत्रों में विभिन्न व्यक्तियों के प्रेरणादायक कार्यकलाप तथा हमारी यशस्वी धरोहर से अवगत हों ताकि वे एक उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की डगर पर अग्रसर हो सकें।

महात्मा गांधी के ऐतिहासिक और क्रांतिकारी नेतृत्व में करोड़ों लोगों ने अपना तन, मन और धन देश की आजादी के महायज्ञ में होम कर दिया था। आजादी की इस कठिन लड़ाई में योगदान करने वाले स्वतंत्रता सेनानी लोकनायकों की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखना हमारा कर्तव्य और दायित्व है। इस दायित्व को पूर्ण करने के लिए राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने राजस्थान निर्माण की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर ''स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा'' श्रृंखला के अन्तर्गत 61 मोनोग्राफों का प्रकाशन किया था।

इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए अकादमी 2006 से 2019 के मध्य दिवंगत हुए लगभग 143 स्वतंत्रता सेनानियों पर अब नवीन मोनोग्राफ प्रकाशित करेगी। स्थापना की स्वर्ण जयन्ती पर अकादमी द्वारा इन विभूतियों के जीवनचरित का यह व्यापक-प्रचार हमारे गौरवमय इतिहास का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण है। इस पुस्तक माला के 6-7 वृहत् खंड प्रकाशित किए जायेंगे।

प्रकाशित ग्रन्थों का डिजिटलीकरण

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी शीघ्र ही पुस्तकों के डिजिटलीकरण पर कार्य करने जा रही है। प्रथम चरण में अकादमी अपनी स्थापना के समय प्रकाशित दुर्लभ ग्रंथों का डिजिटल फार्मेट में रूपान्तरण करवाएगी। ऐसे अनूदित ग्रन्थ जिनका लेखन विश्वप्रसिद्ध विद्वानों द्वारा किया गया है और जिनका प्रकाशन पूर्व में कभी अकादमी ने किया है, उन्हें ई-पुस्तक के माध्यम से सर्वसुलभ एवं सर्वग्राही बनाए जाने का प्रयास भी अकादमी की आगामी कार्ययोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। द्वितीय चरण में अकादमी की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकों को ई-पुस्तक के रूप में लाया जायेगा।

ई–पुस्तकालय

हिन्दी माध्यम की छपी हुई पुस्तकों के प्रकाशन जगत में हिन्दी ग्रन्थ अकादमी का लंबे समय से एक विशिष्ट स्थान है। बदलते युग की आधुनिक जरूरतों को देखते हुए अकादमी ने इन पारंपरिक पुस्तकों की अब डिजिटल फार्मेट में एक ई–लाइब्रेरी बनाने का निर्णय लिया है। आज की इस व्यस्त जिंदगी में उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों को ई–लाइब्रेरी की सुविधा देना, एक तरह से डिजिटल प्रकाशन की अधुनातन दुनिया में हिन्दी माध्यम पाठ्य पुस्तकों का एक सार्थक हस्तक्षेप होगा।

विद्यार्थी एवं शिक्षक अब किसी स्थान विशेष पर पहुँचने की जरूरत से मुक्त होकर इन इलैक्ट्रोनिक पुस्तकों को कहीं भी अपनी सुविधानुसार पढ़ सकेंगे। यही नहीं वह इन पुस्तकों पर अपनी प्रतिक्रिया को भी अकादमी के साथ साझा कर सकेंगे । विद्यार्थियों के इन रचनात्मक सुझावों का पुस्तक लेखक अपनी पुस्तक के आगामी संस्करणों के परिवर्द्धन हेतु उपयोग भी कर सकेंगे। इस तरह अध्ययन और आपसी संवाद का दायरा कई गुना बढ़ जायेगा।

कक्षा पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गई तथा सभी विषयों की संदर्भ पुस्तकें भी इस ई–लाइब्रेरी प्लेटफार्म पर उपलब्ध होंगी। लाइब्रेरी से किसी खास किताब को ढूँढने में भी विद्यार्थियों को आसानी होगी और किताबों के भौतिक रख–रखाव में होने वाली परेशानियों से भी वे मुक्त हो सकेंगे। कोशिश हो रही है कि अकादमी के तमाम प्रकाशन जल्द से जल्द इस फार्मेट में उपलब्ध हो सकें। अकादमी की इस पहल पर शिक्षकों, विद्यार्थी वर्ग एवं आम पाठकों की ओर से उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं ।

अनुवाद पर कार्यशालाएँ

अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी भाषा। किसी भी भाषा के साहित्य में और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में जितना महत्त्व मूल लेखक का है, उससे कम महत्त्व अनुवादक का नहीं है। देश की प्रगति के लिए परिचयात्मक साहित्य, ज्ञानात्मक साहित्य एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद बहुत जरूरी है। देश–विदेश में हो रहे उल्लेखनीय अनुसंधानों को विश्व पटल पर रखने के लिए अनुवाद ही एकमात्र साधन है। इसी क्रम में अकादमी अब तक लगभग 77 पुस्तकों का स्वयं की पहल पर अनुवाद करवाकर प्रकाशन कर चुकी है। अकादमी पुस्तकों के अनुवाद की योजनान्तर्गत एक कार्यशाला का आयोजन भी करेगी जिसमें अनुवाद प्रक्रिया के साथ–साथ लब्धप्रतिष्ठ पुस्तकों, जिनका अनुवाद शिक्षा जगत को लाभान्वित करेगा, को चिन्हित किया जाएगा ताकि आगामी वर्षों में उनका अनुवाद कार्य किया जा सके।

लेखकों हेतु मानक शब्दावली पर कार्यशालाएं

ज्ञान–विज्ञान की असीमित उपलब्धियों एवं तकनीक के क्षेत्र में हो रहे असाधारण वैश्विक विकास के वर्तमान दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी की मानक शब्दावली के निर्माण एवं पाठ्य पुस्तकों में इसकी प्रयुक्ति का प्रश्न हमारी शिक्षा नीति के प्रारूप निर्धारण में महत्त्वपूर्ण होने के साथ–साथ विभिन्न भाषा–भाषी प्रान्तों के बीच आपसी संवाद एवं राष्ट्रीय एकता का भी महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन गया है। नवीनतम अनुसंधानों एवं विशेषीकृत उच्च ज्ञान को भारतीय शिक्षा संस्थानों तथा पठन–पाठन से सम्बन्धित देशज समुदाय के लिए अनुशासनबद्ध, एकरूप एवं संदर्भ–आलोकित रूप में प्रस्तुत करने के लिए हिन्दी की मानक पुस्तकों का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है।

अकादमी की भावी योजनान्तर्गत होने वाली कार्यशालाओं का मुख्य बिन्दु पाठ्य–पुस्तकों में मानक शब्दावली की ध्वनि–व्याकरणसम्मत एकरूप प्रयोगशीलता तथा अर्थ–परिभाषाओं से उदीयमान लेखक अधिकाधिक लाभान्वित होंगे। इन कार्यशालाओं का आयोजन अकादमी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार के सहयोग से करेगी।

गाँधी चिन्तन

मोहनदास करमचंद गाँधी नामक एक युवा बैरिस्टर का महात्मा गाँधी के रूप में रूपांतरण भारत के राष्ट्रीय जीवन में घटी पिछली सदी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। यह एक व्यक्ति का बाह्य अथवा साधारण रूप परिवर्तन नहीं था बल्कि एक संवेदनशील आत्मा का संपूर्ण कायाकल्प था।

दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश लौटे युवा मोहनदास करमचंद गाँधी ने अपने राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले के कहने से समूचे भारत का भ्रमण किया और इस भ्रमण ने इस युवा बैरिस्टर की समूची विचार प्रक्रिया को ही बदल डाला। भारत के अनूठे सांस्कृतिक वैविध्य को उन्होंने इस यात्रा के दौरान देखा। साथ–साथ इस देश की जनता के दुख–दारिद्र्य को देखकर उनका अंतर्मन रो उठा। उन्होंने देखा, भारत का समूचा जनगण किस तरह अंग्रेजों की गुलामी के नीचे पिस रहा है। अंग्रेजों ने इस महान राष्ट्र की नींव को खोद डाला था और जाति–पाँति, धर्म–संप्रदाय, ऊँच–नीच, सवर्ण–अछूत आदि के खाँचो में षड्यंत्रपूर्वक भारतीय समाज को छिन्न–भिन्न कर डाला था।

और यहीं से गाँधीजी इस देश की आजादी के संघर्ष में अपनी भूमिका की शुरुआत करते हैं। गाँधीजी मात्र राजनीतिक नेता नहीं थे अपितु उन्होंने मनुष्य जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया– ग्राम स्वावलंबन, सर्वधर्म समभाव, सामाजिक समरसता, पर्यावरण सुधार, रोजगारोन्मुख बुनियादी तालीम, घर–आंगन की साफ–सफाई आदि जीवन मूल्यों की स्थापना हेतु तथा जातिवाद, सांप्रदायिक विद्वेष, सामाजिक ऊँच–नीच जैसी कुरीतियों के उन्मूलन हेतु उन्होंने देशव्यापी आंदोलन खड़े किए।

वर्ष 2019 महात्मा गाँधी की डेढ़ सौवीं जयन्ती मनाने का वर्ष है। इस अवसर पर उन्हें याद करने और उनके समग्र चिंतन के संदर्भ में इस देश के भविष्य एवं वर्तमान को जाँचने–परखने का भी यह एक दुर्लभ अवसर है। हिन्दी भाषा को लेकर राष्ट्रपिता के ऐतिहासिक अवदान के प्रति कृतज्ञ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी इस वर्ष गाँधीजी के कृतित्व एवं उनके चिंतन पर आधारित संगोष्ठियों एवं सेमीनारों का आयोजन कर रही है। अकादमी की पत्रिका 'हिन्दी बुनियाद' का एक विशेष अंक भी इस अवसर पर प्रकाशित हो रहा है जिसमें गाँधीजी के जीवन एवं चिंतन से सम्बंधित आलेखों एवं छायाचित्रों का समावेश किया गया है।

राजस्थान पुस्तक पर्व का आयोजन

पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने और विभिन्न भाषाओं के लेखकों के साथ एक सार्थक संवाद कायम करने की दृष्टि से 2009 में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने पुस्तक पर्व की शुरुआत की थी। पुस्तक पर्व के शुभंकर का विमोचन अकादमी के तत्कालीन निदेशक डॉ. आर. डी. सैनी ने बोरूंदा जाकर राजस्थान के प्रख्यात साहित्यकार श्री विजयदान देथा के हाथों करवाया था।

इस प्रथम पुस्तक पर्व का आयोजन जयपुर के जवाहर कला केन्द्र के प्रांगण में हुआ। इस दौरान विभिन्न भाषाओं के लेखकों से बातचीत के सत्र चले। हिन्दी, सिन्धी, पंजाबी, राजस्थानी, उर्दू, गुजराती आदि अनेक भाषाओं के साहित्यकारों व पाठ्य पुस्तक लेखकों ने इन संवाद सत्रों में शिरकत की।

भारतभर से आए जानेमाने प्रकाशकों ने इस पुस्तक पर्व में अपनी स्टॉल लगाई। रात्रि को अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें राजस्थान की संस्कृति की झलक मिली।

आगामी वर्ष 2010 में पुस्तक पर्व की शुरुआत पश्चिमी राजस्थान के सांस्कृतिक शहर बीकानेर की धरती से हुई। पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,

बीकानेर, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दवाली आयोग, नई दिल्ली तथा राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के सहयोग से 22,23 व 24 सितम्बर, 2010 तक पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के बीकानेर स्थित प्रांगण में चले इस आयोजन में राजस्थान के विभिन्न अंचलों से आए शिक्षाशास्त्रियों, पाठ्य पुस्तक लेखकों व साहित्यकारों ने समाज विज्ञान तथा तकनीकी विषयों के प्रणयन में हिन्दी भाषा के मानक स्वरूप को लेकर चिंतन–मनन किया। पर्व के सायंकालीन सत्र जहाँ सृजनात्मक लेखन और हिन्दी भाषा की रचनात्मक क्षमता के विभिन्न पक्षों पर, इसकी लोकोन्मुख अभिव्यक्ति पर केन्द्रित रहे, वहीं सुबह एवं दोपहर के सत्रों में पाठ्य पुस्तकों के लेखन में मानक भाषा के प्रयोग सम्बन्धी समस्याओं और मानक शब्दों के निर्माण व अधिकाधिक प्रचलन को लेकर उपयोगी चर्चाएँ हुई। पर्व में आयोजनकर्त्ता हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के तत्कालीन निदेशक डॉ. आर. डी. सैनी,

राजस्थान राज्य अभिलेखागार के निदेशक डॉ. महेन्द्र खड़गावत, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ए. के. गहलोत की उपस्थिति विशेष रही। डॉ. गहलोत ने पुस्तक पर्व में फोल्डर का विमोचन करते हुए इसके औचित्य पर प्रकाश डाला – " राजस्थान पुस्तक पर्व एक नवाचार है जो विद्यार्थियों को कक्षा की पारंपरिक पढ़ाई से आगे किताबों की दुनिया में ले जायेगा, जहाँ वे विषय विशेषज्ञों तथा लेखकों के साथ बात कर सकेंगे।"

बाद में इस पर्व का द्वितीय चरण 20 से 28 नवंबर, 2010 तक जयपुर के जवाहर कला केन्द्र के शिल्पग्राम में आयोजित हुआ। इस पर्व से जयपुर के विभिन्न महिला

महाविद्यालयों व राजस्थान विश्वविद्यालयों के संघटक महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं को भी बड़ी संख्या में जोड़ा गया । पर्व में भारत भर के प्रकाशन संस्थान अपनी बुक स्टॉल लेकर आए। नौ दिन तक चले इस पुस्तक पर्व में प्रतिदिन एक मेला बुलेटिन का भी प्रकाशन किया गया जिसके संपादक वरिष्ठ लेखक श्री रामानंद राठी थे।

24, 25, व 26 नवंबर 2012 को पुस्तक पर्व का तीसरा संस्करण राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के परिसर में ही आयोजित हुआ। भारत भर से आए पुस्तक विक्रेताओं तथा शिक्षाशास्त्रियों व साहित्यकारों ने इसमें शिरकत की।

जुलाई–अगस्त, 2013 में आयोजित पुस्तक पर्व का चतुर्थ संस्करण इस अर्थों में विशिष्ट रहा कि अकादमी की पुस्तकें बिक्री एवं प्रदर्शन हेतु कोटा, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, अजमेर सहित राजस्थान के लगभग 20 प्रमुख शहरों में ले जाई गई।

इस प्रकार राजस्थान पुस्तक पर्व इस अकादमी द्वारा आयोजित एक ऐसा कार्यक्रम है जिसकी प्रतीक्षा राजस्थान के अलावा पूरे भारत के विभिन्न भाषा–भाषी पाठ्यपुस्तक लेखकों–साहित्यकारों तथा पुस्तक विक्रेताओं को प्रतिवर्ष रहती है।

2019–20 में भी अकादमी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक पर्व एवं प्रदर्शनियों का आयोजन करेगी।

❑❑❑

यादों का झरोखा

राजस्थान पुस्तक पर्व

राजस्थान पुस्तक पर्व

पुस्तक प्रदर्शनियाँ

संगोष्ठियाँ

संगोष्ठियाँ

साहित्यिक गतिविधियाँ

समाचारपत्रों से....

पत्रिका से बातचीत में बोले हिंदी ग्रंथ अकादमी के निदेशक

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

अच्छा साहित्य ही संस्कारों का निर्माण करता है : ओम थानवी

राजस्थान पत्रिका • 9.4.2019

पुस्तक बिक्री में बनाया कीर्तिमान

दैनिक नवज्योति • 9.4.2019

स्वर्ण जयंती पर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी 200 से अधिक लेखकों को ... सम्मानित

विचार बिन्दु

पुस्तक संस्कृति प्रसार के लिए भी हो कार्य

राष्ट्रदूत

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

लेखन एवं अनुवाद प्रस्ताव आमंत्रण

1. अकादमी सामाजिक विज्ञान, मानविकी, कला, शिक्षा, वाणिज्य, विधि, विज्ञान एवं तकनीक और चिकित्सा आदि विषयों पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी माध्यम में पुस्तक लेखन प्रस्ताव आमंत्रित करती है।
2. अकादमी उपरोक्त विषयों में मौलिक दृष्टि, अनुभव, विचार एवं दर्शन वाली कृतियों के लेखन प्रस्ताव भी आमंत्रित करती है। ऐसे मौलिक लेखन की कृतियां बीज ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित की जायेंगी।
3. अकादमी उपरोक्त विषयों में प्रचलित अन्य भाषाओं के लब्धप्रतिष्ठ ग्रन्थों के हिन्दी भाषा में अनुवाद की योजना के प्रस्तावों को अनुमोदन पश्चात् प्रकाशित किये जाने हेतु आमंत्रित करती है।

डॉ. बी.एल. सैनी
निदेशक

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

प्लॉट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर
फोन : 0141-2711129 | फैक्स : 0141-2710341
E-mail : rajhindigranth@gmail.com • Website: www.rajhga.com

1969 स्वर्ण जयंती वर्ष 2019

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

प्लॉट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर

फोन : 0141-2711129 | फैक्स : 0141-2710341

E-mail : rajhindigranth@gmail.com

• Website: www.rajhga.com